**MPAMT-602**

# तालों का अध्ययन II

एम0पी0ए0एम0टी0 602 संगीत – तृतीय सेमेस्टर

संगीत, नृत्य एवं कला प्रदर्शन विभाग

मानविकी विद्याशाखा

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

**MPAMT-602**

# तालों का अध्ययन **II**

## एम0पी0ए0एम0टी0 602 संगीत – तृतीय सेमेस्टर

## संगीत, नृत्य एवं कला प्रदर्शन विभाग

## मानविकी विद्याशाखा


उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,
तीनपानी बाईपास रोड, ट्रान्सपोर्ट नगर के पीछे,
हल्द्वानी, जिला नैनीताल, पिनकोड–263139
फोन नं0 : 05946–286000 / 01 / 02
फैक्स नं0 : 05946–264232,
टोल फ्री नं0 : 18001804025
ई–मेल : **info@uou.ac.in**
वेबसाईट : **www.uou.ac.in**

# MPAMT-602

## अध्ययन मंडल


**कुलपति (अध्यक्ष)**
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,
हल्द्वानी, नैनीताल

**प्रो0 एच0 पी0 शुक्ल(संयोजक)**
निदेशक–मानविकी विद्याशाखा,
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,
हल्द्वानी, नैनीताल

**डॉ0 विजय कृष्ण (सदस्य)**
पूर्व विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग,
डी0एस0बी0 कैम्पस, नैनीताल,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

**डॉ0 आशा पाण्डे कृष्ण(सदस्य)**
विभागाध्यक्षा, संगीत विभाग,
एच0एन0बी0 गढ़वाल विश्वविद्यालय,
श्रीनगर

**डॉ0 मल्लिका बैनर्जी(सदस्य)**
संगीत विभाग,
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त.)
विश्वविद्यालय, दिल्ली

**द्विजेश उपाध्याय (सदस्य)**
सहायक प्राध्यापक(ए.सी.)
संगीत, नृत्य एवं कला प्रदर्शन विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,
हल्द्वानी, नैनीताल


## पाठ्यक्रम संयोजन, प्रूफ रिडिंग एवं फार्मेटिंग


**प्रदीप कुमार**
सहायक प्राध्यापक,
संगीत नृत्य एवं कला प्रदर्शन विभाग,
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,
हल्द्वानी, नैनीताल

**द्विजेश उपाध्याय**
सहायक प्राध्यापक(ए.सी.),
संगीत नृत्य एवं कला प्रदर्शन विभाग,
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,
हल्द्वानी, नैनीताल

**जगमोहन परगांई**
सहायक प्राध्यापक(ए.सी.),
संगीत नृत्य एवं कला प्रदर्शन विभाग,
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,
हल्द्वानी, नैनीताल

**अशोक चन्द्र टम्टा**
सहायक प्राध्यापक(ए.सी.),
संगीत नृत्य एवं कला प्रदर्शन विभाग,
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,
हल्द्वानी, नैनीताल

**प्रकाश चन्द्र आर्या**
सहायक प्राध्यापक(ए.सी.),
संगीत नृत्य एवं कला प्रदर्शन विभाग,
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय,
हल्द्वानी, नैनीताल


## पाठ्यक्रम संपादन


**डॉ0 विजय कृष्ण**
पूर्व विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग,
डी0एस0बी0 कैम्पस, नैनीताल,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

**डॉ0 चन्द्रशेखर तिवारी**
वरिष्ठ संगीतज्ञ,
हल्द्वानी, नैनीताल

**डॉ0 रेखा साह**
पूर्व विभागाध्यक्षा, संगीत विभाग,
डी0एस0बी0 कैम्पस, नैनीताल,
कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

**द्विजेश उपाध्याय**
अकादमिक परामर्शदाता–संगीत, नृत्य एवं कला प्रदर्शन विभाग,
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल


## इकाई लेखन

| | | |
|---|---|---|
| 1. | **डॉ0 विजय कृष्ण** | इकाई 1, 2, 3 ,4, 5 व 6 |


**कापीराइट** : @उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
**संस्करण** : सीमित वितरण हेतु पूर्व प्रकाशन प्रति
**प्रकाशन वर्ष** : जुलाई 2021
**प्रकाशक** : उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल–263139
**ई–मेल** : books@uou.ac.in



**इस सामग्री के किसी भी अंश को उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में अथवा मिमियोग्राफी, चकमुद्रण द्वारा या अन्यत्र पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।**

# एम0पी0ए0एम0टी0 602 संगीत – तृतीय सेमेस्टर
# तालों का अध्ययन II– एम0पी0ए0एम0टी0–602


| इकाई | इकाई का नाम | पृष्ठ |
|---|---|---|
| | | |
| इकाई 1 | उत्तर भारत व दक्षिण भारत के अवनद्य वाद्य एवं उनकी उपयोगिता। | 01–07 |
| इकाई 2 | पाश्चात्य संगीत के सन्दर्भ में ताल; पाश्चात्य संगीत के अवनद्य वाद्य एवं उनकी उपयोगिता। | 08–19 |
| इकाई 3 | तिपल्ली, चौपल्ली, फरमाइशी, कमाली, नौहक्का, तिहाई(दमदार, बेदम, चक्करदार) की व्याख्या उदाहरण सहित। | 20–29 |
| इकाई 4 | पाठ्यक्रम की तालों का परिचय व तालों के ठेकों को दुगुन, तिगुन व चौगुन की लयकारी सहित लिपिबद्ध करना। | 30–41 |
| इकाई 5 | पाठ्यक्रम की तालों के ठेकों को आड, कुआड, बिआड, 3/4, 4/3 व 4/5 की लयकारी सहित लिपिबद्ध करना। | 42–49 |
| इकाई 6 | तबले की रचनाओं (पाठ्यक्रमानुसार) को लिपिबद्ध करना। | 50–67 |

# इकाई 1 – उत्तर भारत व दक्षिण भारत के अवनद्य वाद्य एवं उनकी उपयोगिता

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 अवनद्य वाद्य
1.4 उत्तर भारत के अवनद्य वाद्य एवं उनकी उपयोगिता
1.4.1 पखावज
1.4.2 तबला
1.5 दक्षिण भारत के अवनद्य वाद्य एवं उनकी उपयोगिता
1.5.1 मृदंगम
1.5.2 खंजीरम
1.5.3 घटम
1.6 सारांश
1.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

## 1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई प्रदर्शन कला–संगीत में स्नातकोत्तर, तृतीय सेमेस्टर (एम0पी0ए0एम0टी0–602) पाठ्यक्रम की पहली इकाई है। इससे पूर्व में आपने भारतीय संगीत के अवनद्य वाद्य तबला एवं पखावज वाद्य से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी प्राप्त की एवं आप इन वाद्यों की उत्पत्ति, वादन शैली एवं घरानों से परिचित हो गए होंगे।

इस इकाई में उत्तर भारत व दक्षिण भारत के अवनद्य वाद्यों के विषय में बताया गया है। आप इस इकाई में उत्तर भारत व दक्षिण भारत के अवनद्य वाद्यों की उपयोगिता के विषय में भी अध्ययन करेंगे।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप उत्तर भारत व दक्षिण भारत के अवनद्य वाद्यों से परिचित हो सकेंगे। आप उत्तर भारत व दक्षिण भारत में प्रयोग होने वाले अवनद्य वाद्यों की उपयोगिता के विषय में भी जान सकेंगे।

## 1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप :–

1. उत्तर भारत के अवनद्य वाद्यों को जान सकेंगे।
2. दक्षिण भारत के अवनद्य वाद्यों को जान सकेंगे।
3. उत्तर भारत व दक्षिण भारत में प्रयोग होने वाले अवनद्य वाद्यों की उपयोगिता के विषय में जान सकेंगे।

## 1.3 अवनद्य वाद्य

संगीत का आधार ध्वनि है फिर चाहे वह प्राकृतिक हो या फिर वाद्यों के द्वारा उत्पन्न हो। महर्षि भरत ने वाद्यों की संख्या चार(तत्, अवनद्य, घन एवं सुषिर) मानी है एवं इस प्रकार वाद्यों को चार श्रेणीयों में वर्गीकृत किया गया। इनका नामकरण तत वाद्य, अवनद्य वाद्य, घन वाद्य एवं सुषिर वाद्य के रूप में किया गया। बाद में आनद्य शब्द के स्थान पर अवनद्य प्रयोग किया जाने लगा। तानसेन द्वारा आनद्य अथवा अवनद्य के स्थान पर वितत शब्द का प्रयोग किया परन्तु बाद में फिर से वितत के स्थान पर अवनद्य शब्द का प्रयोग हुआ जो कि संगीत में वर्तमान में भी प्रचलित है। पाश्चात्य संगीत में वाद्यों को तीन श्रेणी – String Instrument (स्ट्रिंग इन्सटुमेंट) तार वाद्य, Wind Intruments (विन्ड इन्सट्रुमेंट) – हवा वाले वाद्य एवं Percussion Instrument (परकशन इन्सट्रुमेंट) – ऐसे वाद्य जिनमें ध्वनि प्रहार करने से प्राप्त की जाती है, में वर्गीकृत किया गया है। Percussion Instrument के अन्तर्गत पाश्चात्य संगीत में अवनद्य एवं घन दोनों प्रकार के वाद्य सम्मिलित किए गए हैं। अवनद्य वाद्यों का प्रयोग संगीत में लय एवं ताल प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। अवनद्य वाद्य वो वाद्य हैं जो भीतर से खोखले होते हैं एवं इनके मुख पर चमड़ा मढा होता है। चमड़ा एक मुख एवं दोनों मुख पर मढा हो सकता है एवं इनको हाथ की अंगुली, पंजे के प्रहार से अथवा लकड़ी की सहायता से बजाया जाता है। इनकी आकृति भिन्न–भिन्न होती है। इस श्रेणी में पखावज, मृदंगम, तबला, ढोलक, खोल, नाल, मादल, ढोल, हुडुका, खंजरी, नगाड़ा, दमामा, ढाक एवं डमरू वाद्य आते हैं। क्षेत्रीय लोक संगीत में वाद्यों के नाम अलग–अलग हैं। अवनद्य वाद्यों का प्रयोग शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत एवं लोक संगीत में आवश्यक रूप से होता है। इन सभी संगीत की विभिन्न धाराओं में अवनद्य वाद्यों का प्रयोग उनकी आवश्यकतानुसार किया जाता है। भारतवर्ष में शास्त्रीय संगीत की दो धाराएं उत्तर भारतीय संगीत एवं दक्षिण भारतीय संगीत प्रचलित हैं। दक्षिण भारतीय संगीत को कर्नाटक संगीत भी कहा जाता है। इन दोनों संगीत शैलियों में पृथक–पृथक अवनद्य वाद्यों का प्रयोग किया जाता है एवं इनकी वादन विधि भी पृथक है। उत्तर भारतीय एवं दक्षिण भारतीय संगीत में प्रयोग होने वाले अवनद्य वाद्यों की चर्चा आगे की जाएगी।

## 1.4 उत्तर भारत के अवनद्य वाद्य एवं उनकी उपयोगिता

पखावज एवं तबला उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रयोग होने वाले अवनद्य वाद्य हैं। इन दोनों वाद्यों की भौतिक संरचना से आप भली–भांति परिचित हैं अतः इसकी चर्चा करना यहां आवश्यक नहीं है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में दो गायन शैलियां–ध्रुपद–धमार एवं ख्याल शैली प्रचलित हैं। इसके अतिरिक्त उपशास्त्रीय गायन शैली ठुमरी–दादरा का प्रयोग भी संगीत के अन्तर्गत किया जाता है। सुगम संगीत में भजन, गीत एवं गजल गायन भी लोकप्रिय हैं। इन सभी शैलियों में तबला एवं पखावज वाद्य का प्रयोग पृथक रूप से होता है। सुगम संगीत में ढोलक वाद्य का प्रयोग भी किया जाता है। ढोलक वाद्य का प्रयोग शास्त्रीय संगीत में नहीं किया जाता है। यहां पर पखावज व तबला वाद्य एवं उसकी उपयोगिता पर चर्चा की जाएगी।

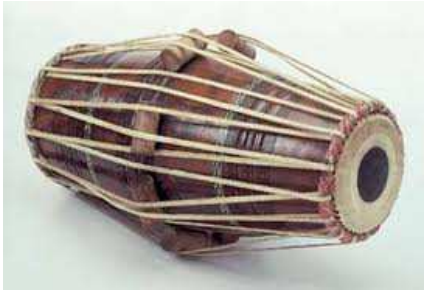

**1.4.1 पखावज** – उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रयोग होने वाला पखावज वाद्य प्राचीन है जिसको पूर्व में मृदंग कहा जाता था। परन्तु अब यह उत्तर भारत में पखावज एवं मृदंग दोनों ही नाम से प्रचलित है। इस वाद्य के दोनों मुख पर चमड़ा मढ़ा होता है, जिसमें एक मुख पर स्याही लगाई जाती है। यह स्याही मुख के बीच में गोलाकार में लगाई जाती है जो कि लोहे के चूर्ण एवं पके हुए चावल से बनाई जाती है। पखावज के इस भाग को ही वांछित स्वर में मिलाया जाता है। दूसरे मुख पर वादन से पूर्व आवश्यकतानुसार गुथा हुआ आटा लगाया जाता है, जिसको वादन के पश्चात निकाल लिया जाता है। इन दोनों मढ़े हुए भाग को पूडी कहते हैं। स्याही वाली पूडी के छोटे होने पर ऊंचा स्वर एवं बढ़ा होने पर नीचा स्वर प्राप्त होता है। अतः वांछित स्वर के आधार पर ही छोटे अथवा बड़े मुख वाला पखावज प्रयोग किया जाता है। पखावज की ध्वनि गंभीर होती है अतः इसका प्रयोग ध्रुपद–धमार शैली के साथ किया जाता है। पखावज का प्रयोग गायन व वादन की संगति हेतु किया जाता है एवं पखावज पर एकल वादन भी किया जाता है। इस वाद्य की ध्वनि गंभीर एवं खुली होती है। ध्रुपद–धमार शैली का प्रयोग गायन एवं वाद्यों दोनों पर किया जाता है। ध्रुपद–धमार गायन शैली में पखावज पर बजने वाली ताल, ध्रुपद ताल होती है जिसे चारताल भी कहा जाता है। चारताल के अतिरिक्त धमार ताल, सूलताल, तीवरा, गजझम्पा आदि तालों में गीत की रचनाएं प्रस्तुत की जाती हैं जो कि शास्त्रीय संगीत के रागों में निबद्ध होती हैं। इन रागों एवं रचनाओं का विस्तार लय एवं लयकारी के विभिन्न प्रकारों के साथ बोल बांट से किया जाता है एवं पखावज पर उसी प्रकार की संगति की जाती है।

वाद्यों में यह शैली विभिन्न प्रकार की वीणा जैसे रूद्र वीणा आदि व सुरबहार पर प्रयोग की जाती है। ध्रुपद–धमार शैली गंभीर प्रकृति की है अतः इसके साथ पखावज की संगति इस शैली को सुशोभित करती है।

उत्तर भारत के शास्त्रीय नृत्य कथक में भी पखावज की संगति की जाती है। कथक नृत्य के बोल पखावज के बोलों के समान होते हैं एवं नृत्य में खुले एवं जोरदार बोलों की संगति की आवश्यकता होती है जो पखावज वाद्य पूर्ण करता है।

इसके अतिरिक्त पखावज वाद्य का प्रयोग हवेली संगीत में भी किया जाता है एवं फिल्म संगीत में भी पखावज वाद्य का प्रयोग देखा जाता है। पखावज वाद्य पर एकल वादन भी प्रस्तुत किया जाता है जिसमें पखावज की रचनाएं जैसे परन, टुकड़े, गत, पडार एवं विभिन्न प्रकार की चक्करदार रचनाएं प्रस्तुत की जाती हैं। इस प्रकार उत्तर भारतीय संगीत में पखावज वाद्य का विशेष स्थान है एवं लय प्रदर्शित करने के लिए बहुत उपयोगी है।

**1.4.2 तबला** – उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में तबला अत्यधिक लोकप्रिय एवं प्रचलित वाद्य है जिसका जन्म पखावज वाद्य के बाद में हुआ। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत गायन में ख्याल गायन शैली के लिए तबला वाद्य का आविष्कार हुआ क्योंकि ख्याल गायन शैली के साथ कोमल एवं मधुर ध्वनि वाले वाद्य की आवश्यकता समझी गई जिसको तबला वाद्य ने पूर्ण किया।

वीणा के पश्चात सितार एवं सरोद वाद्य प्रचलित एवं बहुत अधिक लोकप्रिय हुए एवं इन दोनों वाद्यों पर गतें बजाई जाने लगी। उस्ताद मसीत खां द्वारा मसीतखानी गत एवं उस्ताद रजा खां द्वारा रजाखानी गत बनाई गई जिनका प्रयोग तन्त्र वाद्यों पर होने लगा जिसे गतकारी बाज कहा गया। इस गतकारी बाज के लिए पखावज वाद्य की संगति अधिक उपयुक्त नहीं थी तथा तबला वाद्य गतकारी बाज के साथ प्रयोग किया जाने लगा। ख्याल गायन एवं तन्त्र वाद्यों के साथ तबला की संगति ने लोकप्रियता प्राप्त की। तन्त्र वाद्यों के अतिरिक्त गज से बजने वाले वाद्य जैसे सारंगी, वायलिन, इसराज आदि वाद्यों के साथ भी तबला ही प्रयोग होने लगा। सुषिर वाद्य शहनाई एवं बांसुरी के साथ भी तबला वाद्य ही संगति के लिए प्रयोग किया गया, जिसका प्रचलन वर्तमान समय तक है। इस प्रकार तबला वाद्य उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की गायन एवं वाद्य वादन में संगति के रूप में बहुत अधिक लोकप्रिय हुआ एवं पखावज की अपेक्षा तबला से संगीत के जिज्ञासु अधिक आकर्षित हुए। इसका श्रेय साठ के दशक के तबला वादकों को जाता है। उस्ताद अहमद जान थिरकवा, उस्ताद हबीबुद्दीन खॉ, पं0 कठे महाराज, पं0 अनोखेलाल मिश्रा, उस्ताद नत्थू खां, उस्ताद मसीत खां, उस्ताद कादिर बख्श, पं0 किशन महाराज, पं0 सामता प्रसाद, उस्ताद अल्ला रक्खा खां आदि तबला वादकों ने तबला को लोकप्रिय बनाने में अभूतपूर्व योगदान दिया एवं इनके शिष्य वर्तमान समय में भी तबला वादन के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

तबला वाद्य का प्रयोग शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त उपशास्त्रीय संगीत की विधा जैसे ठुमरी–दादरा में भी किया जाता है जिसके लिए पखावज वाद्य उपयुक्त नहीं था। क्योंकि ठुमरी–दादरा श्रृंगारिक एवं चंचल प्रकृति की गायन शैली है एवं पखावज गंभीर प्रकृति का वाद्य है। अतः तबला वाद्य की संगति ही ठुमरी–दादरा के साथ उपयुक्त थी। ठुमरी–दादरा के साथ बाद में बजने वाली लग्गी एवं लड़ी भी पखावज पर नहीं बजाई जा सकती थी क्योंकि यह तबला वादन शैली की रचना है। अतः ठुमरी–दादरा के साथ तबला की संगति ने ठुमरी–दादरा शैली को पूर्णता प्रदान की।

तबला वाद्य की संगति सुगम संगीत की विधाएं जैसे गजल, गीत, भजन के साथ भी की जाती है। इन विधाओं के साथ तबला वाद्य की संगति का महत्वपूर्ण स्थान होता है। गजल के साथ कुशल तबला वादक गजल गायन शैली में चार चांद लगा देता है। प्रत्येक गजल गायक के प्रायः निश्चित तबला वादक होते हैं एवं उन्ही के साथ वे अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। गीत एवं गजल में भी तबला वाद्य आवश्यक अवनद्य के रूप में उपस्थित रहता है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय नृत्य कत्थक में भी तबला वाद्य का होना अनिवार्य है। कत्थक नृत्य के साथ तबला पर संगति करने में पं0 सामता (गुदई महाराज), पं0 किशन महाराज एवं उस्ताद अल्लारक्खा ने विशेष ख्याति अर्जित की।

फिल्म में उत्तर भारतीय संगीत पर आधारित संगीत में भी तबले का भरपूर प्रयोग हुआ एवं तबला फिल्म संगीत का अभिन्न अंग बन गया। पं0 सामता प्रसाद ने फिल्म 'झनक–झनक पायल बाजें' एवं 'मेरी सूरत तेरी आंखे' आदि फिल्मों में तबला वादन कर विशेष प्रशंसा प्राप्त की। फिल्मों में तबला का प्रयोग गाने के साथ संगत के रूप में एवं विशेष प्रभाव उत्पन्न करने के लिये किया जाता है। फिल्मों में मुजरे के दृश्यों में तबला वादन देखा एवं सुना जा सकता है। अतः तबला फिल्म संगीत का भी महत्वपूर्ण एवं आवश्यक अवनद्य वाद्य है।

दक्षिण भारत को छोड़कर देश के अन्य सभी प्रांतों में तबला का प्रयोग यहां के लोक संगीत के साथ भी किया जा रहा है। लोक गीतों में पारम्परिक लोक अवनद्ध वाद्य के साथ तबला वाद्य का प्रयोग भी किया जाने लगा है। सूफी गायन एवं कव्वाली में भी तबला वाद्य की संगति की जाती है एवं ढोलक वाद्य के साथ इसका सुदंर सामंजस्य कार्यक्रम की शोभा बडाता है। तबला वाद्य का प्रयोग वाद्यवृन्द एवं तबला तरंग वादन में भी किया जाता है। अतः तबला वाद्य का प्रयोग

संगीत की सभी विधाएं जैसे गायन, वादन, नृत्य एवं संगीत की विभिन्न प्रकार जैसे शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत एवं लोक संगीत के साथ किया जा रहा है। अतः तबला उत्तर भारतीय संगीत का महत्वपूर्ण अवनद्य वाद्य है।

## 1.5 दक्षिण भारत के अवनद्य वाद्य एवं उनकी उपयोगिता

दक्षिण भारतीय संगीत जिसे कर्नाटक संगीत भी कहा जाता है, के अवनद्य वाद्यों में प्रमुख रूप से मृदंगम, खंजीरम एवं घटम आते हैं। इन तीनों वाद्यों का प्रयोग किसी भी कार्यक्रम में एक साथ किया जाता है परन्तु इनका वादन पृथक एवं सम्मिलित रूप से भी किया जाता है। इन सब अवनद्य वाद्यों में मृदंगम का मुख्य स्थान है एवं अन्य दो वाद्य खंजीरम एवं घटम पर भी मृदंगम की वादन शैली ही प्रयोग की जाती है।

**1.5.1 मृदंगम** – दक्षिण भारतीय संगीत में प्रयोग होने वाला मृदंगम देखने में लगभग उत्तर भारतीय संगीत के अवनद्य वाद्य पखावज की भांति ही है परन्तु वादन शैलियों के अन्तर के कारण इन दोनों वाद्यों में कुछ–कुछ अन्तर है। मृदंगम, पखावज की अपेक्षा छोटे आकार का होता है। यद्यपि पखावज भी भिन्न–भिन्न छोटे एवं बड़े आकार की होती है परन्तु मृदंगम का आकार लगभग एक ही रहता है। पखावज में दाहिने हाथ से बजाई जाने वाली पूड़ी की किनार लगभग एक इंच व्यास की होती है जबकि मृदंगम में किनार चौडी होती है एवं स्याही से लगी हुई होती है, जिस पर प्रहार कर विभिंन्न प्रकार के बोल निकाले जाते हैं। इसी प्रकार मृदंगम का बायां मुख भी पखावज के बाएं मुख की अपेक्षा छोटा होता है एवं किनार भी पखावज की अपेक्षा चौडी होती है। इससे मृदगंम पर आटा लगाने हेतु स्थान पखावज की अपेक्षा छोटा होता है। पूडी की किनार का आकार छोटा बडा होने से इन दोनों वाद्यों की ध्वनि में अन्तर है। दाएं एवं बाएं मुख की पुडी को चमडे की बद्दी से कसा जाता है। पखावज की अपेक्षा मृदंगम में गट्टे पतले एवं कभी नहीं भी होते हैं। मृदंगम पर चांटी का प्रयोग तबले की भांति ही किया जाता है एवं इसकी वादन शैली तबला एवं ढोलक का मिला जुला स्वरूप लिये हुए होती है। मृदंगम पर कनार्टक संगीत में गायन, वादन एवं नृत्य की संगति की जाती है। किसी भी कर्नाटक संगीत के कार्यक्रम में लय एवं ताल प्रदर्शित करने के लिये मृदंगम की विशेष भूमिका रहती है। मृदंगम पर कर्नाटक संगीत की तालों का वादन किया जाता है। मृदंगम का प्रयोग संगीत के अतिरिक्त कार्यक्रम के अन्तर्गत एकल वादन के रूप में भी होता है, जिसमें मृदंगम वादक को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्राप्त होता हैं। यह परम्पराएं पखावज वादन शैली में नहीं हैं। मृदंगम वादन के इस प्रकार के एकल वादन में संगीतकार अपना गायन एवं वादन छोड़कर मात्र हाथ से लय एवं ताल प्रदर्शित करते हैं जिसके आधार पर मृदंगम वादक अपना वादन प्रस्तुत करते हैं एवं इसकी समाप्ति पर पुनः गायक एवं वादक अपने मुख्य कार्यक्रम को आगे बढाते हैं।

**1.5.2 खंजीरम** – खंजीरम वाद्य उत्तर एवं मध्य भारत में लोक संगीत में प्रयोग होने वाला वाद्य है जो ढफली, ढाक एवं खंजडी के आकार का होता है। यह एक मुख वाला वाद्य है जिसमें केवल एक ही मुख पर चमड़ा लकड़ी के घेरे में मढा होता है। लकड़ी के घेरे को बीच–बीच में से काटकर उसमें धातु की पत्तियां लगाई जाती हैं जिससे वादन के समय यह पत्तियां स्वयं हिलकर झनकार उत्पन्न करती हैं। यह ध्वनि खंजीरम के वादन के साथ मिलकर आकर्षण पैदा करती है। यह लकड़ी अथवा पीतल धातु की बनी होती है, जिसको बाएं हाथ से पकड़कर दांहिने हाथ से बजाया जाता है।

कर्नाटक सगीत में इसका प्रयोग किया जाता है जिस पर मृदंगम वादन शैली का प्रयोग किया जाता है। इसका स्वर लगभग निश्चित रहता है एवं नीचा स्वर प्राप्त करने के लिये पूड़ी पर गीला कपड़ा लगाया जाता है। इस वाद्य को कर्नाटक संगीत में गंजीरा भी कहा जाता है। कर्नाटक संगीत के कार्यक्रम में खंजीरम वादक को मृदंगम वादक की भांति एकल वादन प्रस्तुत करने का अवसर प्राप्त होता हैं। ताल वाद्य कचहरी में अन्य अवनद्य वाद्यों के साथ खंजीरम का प्रयोग भी आवश्यक रूप से किया जाता है।

**1.5.3 घटम** – यह ग्रामीण क्षेत्रों में पानी को इकट्ठा करने के लिये मिट्टी का एक पात्र होता है। परन्तु संगीत में प्रयोग करने के लिये इसको सावधानी के साथ बनाया जाता है एवं मिट्टी को अच्छी प्रकार पकाया जाता है। कर्नाटक संगीत में प्रयोग होने वाले घटम का मुख छोटा होता है एवं इस पर किसी प्रकार का चमड़ा नहीं लगा होता है। घटम को गोद में रखकर दोनों हाथों के प्रहार से मुख के दाएं एवं बाएं भाग पर बजाया जाता है। इस पर भी मृदंगम वादन शैली का प्रयोग किया जाता हैं। मृदंगम एवं खंजीरम की भांति ही कर्नाटक संगीत के कार्यक्रम में घटम वादक को अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर एकल वादन के रूप में प्राप्त होता है। घटम में किसी प्रकार का स्वर निश्चित नहीं किया जा सकता बल्कि खटके की ध्वनि को लय एवं ताल के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। कर्नाटक संगीत की ताल वाद्य कचहरी में घटम वादन का विशेष आकर्षण रहता है।

**अभ्यास प्रश्न**

क. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :–

1. महर्षि भरत ने वाद्यों की संख्या ..... मानी है।
2. पाश्चात्य संगीत में वाद्यों को ..... श्रेणियों में विभाजित किया गया है।
3. पाश्चात्य संगीत में ..... वाद्यों के अन्तर्गत अवनद्य एवं घन दोनों प्रकार के वाद्य सम्मिलित किए गए हैं।
4. अवनद्य वाद्यों का प्रयोग संगीत में ..... प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है।
5. पखावज वाद्य को प्राचीनकाल में ..... कहा जाता था।
6. पखावज का प्रयोग ..... गायन शैली के साथ किया जाता है।
7. पडार रचना ..... अवनद्य वाद्य पर बजाई जाती है।
8. लग्गी एवं लड़ी ..... अवनद्य वाद्य पर बजाई जाती है।

9. मृदंगम, पखावज की अपेक्षा ..... आकार का होता है।
10. खंजीरम एवं घटम पर .....वाद्य की वादन शैली प्रयोग की जाती है।
11. घटम में ..... की ध्वनि को लय एवं ताल के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

## 1.6 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप उत्तर भारत व दक्षिण भारत के अवनद्य वाद्यों से परिचित हो चुके होंगे। अवनद्य वाद्यों का प्रयोग संगीत में लय एवं ताल प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। अवनद्य वाद्य वे वाद्य हैं जो भीतर से खोखले होते हैं एवं इनके मुख पर चमड़ा मढा होता है। चमड़ा एक मुख एवं दोनों मुख पर मढा हो सकता है एवं इनको हाथ की अंगुली, पंजे के प्रहार से अथवा लकड़ी की सहायता से बजाया जाता है। अवनद्य वाद्यों का प्रयोग शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत एवं लोक संगीत में आवश्यक रूप से होता है। इन सभी संगीत की विभिन्न धाराओं में अवनद्य वाद्यों का प्रयोग उनकी आवश्यकतानुसार किया जाता है। भारतवर्ष में शास्त्रीय संगीत की दो धाराएं उत्तर भारतीय संगीत एवं दक्षिण भारतीय संगीत प्रचलित हैं। इन दोनों संगीत शैलियों में पृथक–पृथक अवनद्य वाद्यों का प्रयोग किया जाता है एवं इनकी वादन विधि भी पृथक है। आप उत्तर भारत व दक्षिण भारत में प्रयोग होने वाले अवनद्य वाद्यों की उपयोगिता के विषय में भी जान चुके होंगे।

## 1.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

क. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :–

1. चार(तत, अवनद्य, घन एवं सुषिर)
2. तीन {String Instrument (स्ट्रिंग इन्सटुमेंट), Wind Intruments (विन्ड इन्सट्रुमेंट) एवं Percussion Instrument (परकशन इन्सट्रुमेंट)}
3. Percussion Instrument (परकशन इन्सट्रुमेंट)
4. लय एवं ताल
5. मृदंग
6. ध्रुपद–धमार शैली
7. पखावज
8. तबला
9. छोटे
10. मृदंगम
11. खटके की ध्वनि

## 1.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वसन्त, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय, हाथरस।
2. मिश्र, डा0 लालमणि, *भारतीय संगीत वाद्य'*, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. Wikipedia Encyclopedia– List of Musical Instrument.
4. साभार गूगल।

## 1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. उत्तर भारत व दक्षिण भारत में प्रयोग होने वाले अवनद्य वाद्यों के विषय में लिखिए।

इकाई 2 – पाश्चात्य संगीत के सन्दर्भ में ताल; पाश्चात्य संगीत के अवनद्य वाद्य एवं उनकी उपयोगिता

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 पाश्चात्य संगीत के सन्दर्भ में ताल
2.4 स्टाफ नोटेशन (स्टाफ स्वरलिपि पद्धति)
2.4.1 **Time Signature** टाइम सिग्नेचर
2.4.2 **Simple Time** सिम्पल टाइम
2.4.3 **Duple Time** डयुपल टाइम
2.4.4 **Triple Time** ट्रिपल टाइम
2.4.5 **Quadruple Time** क्वाड्रपल टाइम
2.4.6 **Common Time** कामन टाइम
2.5 पाश्चात्य संगीत के अवनद्य वाद्य एवं उनकी उपयोगिता
2.5.1 **Bongo Drum** बौंगो ड्रम
2.5.2 **Congo Drum** कौंगोड्रम
2.5.3 **Timpani or Kettle Drum** टिम्पैनी अथवा कैटिल ड्रम
2.5.4 **Snare Drum or Side Drum** स्नेअर ड्रम अथवा साइड ड्रम
2.5.5 **Bass Drum** बास ड्रम
2.5.6 **Tamborin** टैम्बोरीन
2.6 सारांश
2.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

## 2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई प्रदर्शन कला–संगीत में स्नातकोत्तर, तृतीय सेमेस्टर (एम0पी0ए0एम0टी0–602) पाठ्यक्रम की दूसरी इकाई है। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने भारतीय संगीत के अवनद्य वाद्य तबला एवं पखावज वाद्य के सम्बन्ध विस्तृत जानकारी प्राप्त की एवं आप इन वाद्यों की उत्पत्ति, वादन शैली एवं घरानों से परिचित हो गए होंगे। आप उत्तर भारत व दक्षिण भारत में प्रयुक्त होने वाले वाद्यों से भी परिचित हो चुके होंगे।

इस इकाई में पाश्चात्य संगीत के सन्दर्भ में ताल को समझाया गया है। आप इस इकाई में पाश्चात्य संगीत में प्रयुक्त होने वाले अवनद्य वाद्य एवं उनकी उपयोगिता के विषय में भी अध्ययन करेंगे।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप पाश्चात्य संगीत में ताल के सन्दर्भ में प्रयुक्त होने वाले शब्द, पाश्चात्य संगीत के लय स्वरूप को लिखने की विधि एवं पाश्चात्य संगीत में प्रयोग होने वाली स्टाफ स्वर लिपि से परिचित हो सकेंगे। आप पाश्चात्य संगीत में प्रयोग होने वाल अवनद्य वाद्यों के विषय में भी जान सकेंगे।

## 2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप :–

1. पाश्चात्य संगीत के सन्दर्भ में ताल को समझ सकेंगे।
2. स्टाफ स्वरलिपि में पाश्चात्य संगीत के rhythm को लिख पाएंगे।
3. पाश्चात्य संगीत में प्रयोग होने वाल अवनद्य वाद्यों के विषय में जान सकेंगे।

## 2.3 पाश्चात्य संगीत के सन्दर्भ में ताल

विश्व के प्रत्येक भाग में संगीत किसी न किसी रूप में मिलता है जिसका आधार स्वर एवं लय है। ध्वनि एवं लय प्रकृति प्रदत हैं जिससे क्रमशः संगीत हेतु स्वर एवं विभिन्न लय स्वरूप प्राप्त हुए तथा जिनका विकास मुख्य रूप से बौद्धिक स्तर पर हुआ। विभिन्न लय स्वरूपों से ताल की परिकल्पना हुईं एवं यही पाश्चात्य ताल का स्वरूप है। भारतीय संगीत से पाश्चात्य संगीत में ताल का स्वरूप भिन्न है। पाश्चात्य संगीत में ताल के स्वरूप के सन्दर्भ में Rhythm (रिदम) है। भारतीय संगीत में भी Rhythm शब्द का प्रयोग होता है जिसमें मात्राओं की चाल लय स्वरूप एवं प्रयुक्त होने वाले बोलों का प्रयोग होता है। इन सबके आधार पर Rhythm का स्वरूप स्थापित होता है। पाश्चात्य संगीत में Rhythm के अन्तर्गत ताल अथवा समय सम्बन्धित सभी तथ्यों का समावेश होता है और भारतीय संगीत में ताल निश्चित मात्राओं की आवृत्ति, निश्चित विभाग एवं विभाग में निश्चित मात्राओं के आधार पर बोल जिसको ठेका कहते हैं, से ताल का स्वरूप स्थापित किया जाता है। जबकि पाश्चात्य संगीत में ताल अथवा Rhythm का आधार (Beat बीट्स) अथवा मात्रा–खण्डों, accent (एक्सेन्ट) जिसका तात्पर्य उच्चारण बल से है एवं निश्चित काल खण्ड जिन्हें Measures of Bars (मेजर्स अथवा बार) कहते हैं, से है। जिस प्रकार भारतीय संगीत में ताल के विभाग की प्रथम मात्रा में अधिक जोर दिया जाता है उसी प्रकार पाश्चात्य संगीत में भी प्रत्येक मेजर्स की प्रथम बीट का उच्चारण, बल अन्य बीट्स की अपेक्षा अधिक होता है। यदि किसी मेजर्स में 3 बीटस बीट्स हैं तो पहली बीट्स पर उच्चारण, बल अधिक एवं अन्य मात्राओं पर सामान्य होगा। चार मेजर्स होने पर उसको एक फ्रेज One Phrase कहा जाता है।

दो रिदम के उदाहरण निम्न हैं :–

1, 2 | 1, 2 | 1, 2 | 1 2 | अथवा 1 2 3 | 1 2 3 | 1 2 3 | 1 2 3 |

पहले फ्रेज के प्रत्येक मेजर्स में दो–दो बीट के काल खण्ड हैं एवं दूसरे फ्रेज के प्रत्येक मेजर्स में तीन–तीन बीट के काल खण्ड हैं। इन दोनों में जब भी एक अंक आएगा उस पर अधिक बल दिया जाएगा एवं इस प्रकार लय का जो भाव स्थापित होगा उसको रिदम कहा जाएगा एवं यही पाश्चात्य ताल के स्वरूप का आधार है।

प्राचीन तालों को लघु, गुरू, प्लुत, द्रुत एव अणुद्रत अंगों से प्रदिर्शित किया जाता था एवं वर्तमान दक्षिण भारतीय संगीत में तालों को लघु एवं गुरू अंगों से प्रदर्शित किया जाता है। पाश्चात्य संगीत में भी रिदम की मात्राओं को सेमी ब्रीव, मिनिम, क्रोशे, क्वेवर, सेमी क्वेवर एवं डेमी–सेमी क्वेवर से प्रदर्शित किया जाता है जिनके चिन्ह, मात्राओं का मान निम्न प्रकार से है :–

| चिन्ह | नाम | पाश्चात्य मात्रायें | भारतीय मात्रायें |
|---|---|---|---|
| 𝅜 | Breve (ब्रीव) | (2) Two whole note | 8 |
| 𝅝 | Semi Breve(सेमी–ब्रीव) | (1) one whole note | 4 |
| 𝅗𝅥 | Minim(मिनिम) | $(\frac{1}{2})$ Two half note | 2 |
| ♩ | Crotchet(क्रोचेट या क्रोशे) | $(\frac{1}{4})$Four Quarater note | 1 |
| ♪ | Quaver(क्वेवर) | $(\frac{1}{8})$ Eight notes | $\frac{1}{2}$ |
| 𝅘𝅥𝅯 | Semi-Quaver(सेमी क्वेवर) | $(\frac{1}{16})$ Sixteen notes | $\frac{1}{4}$ |
| 𝅘𝅥𝅰 | Demi-Semi-Quaver(डेमी सेमी क्वेवर) | $\frac{1}{32}$ Thirty two notes | $\frac{1}{8}$ |
| 𝅘𝅥𝅱 | Hemi-Demi-Semi-Quaver(हेमी डेमी सेमी क्वेवर) | $\frac{1}{64}$ Sixty four notes | $\frac{1}{16}$ |
| 𝅘𝅥𝅲 | Semi-Hemi-Demi-Semi-Quaver (सेमी हेमी डेमी सेमी क्वेवर) | $\frac{1}{128}$ 128 One hundred Twenty eight | $\frac{1}{32}$ |

लघु की एक मात्रा होने पर भारतीय ताल में सेमी ब्रीव–लघु, मिनिम–द्रुत एवं क्रोशे–अणुद्रुत के समकक्ष है।

पाश्चात्य संगीत में अधिकर स्टाफ स्वरलिपि पद्धति प्रचलित है एवं इसकी विशेषता है कि इसमें स्वर एवं ताल दोनों को ही उपर दिए गए संकेत चिन्हों से प्रदर्शित करते हैं। भारतीय कलाकार एवं फिल्म संगीत में स्टाफ नोटेशन के माध्यम से ही स्वर–ताल लिखे जाते हैं। इस पद्धति में स्वर लिपि में बहुत शीघ्रता से लिखे जा सकते हैं। भारतीय संगीत में जिस प्रकार ताल एवं उनके प्रयोग हैं उस प्रकार पाश्चात्य संगीत में ना तो ताल के वे स्वरूप है और ना हीं वैसे

तालों के प्रयोग हैं। भारतीय संगीत के सन्दर्भ में पाश्चात्य तालों को केवल लय स्वरूप ही कहा जा सकता है। वैसे भी पाश्चात्य संगीत में ताल शब्द का प्रयोग भी नहीं है। पाश्चात्य संगीत में रिदम का ही प्रयोग किया जाता है, जिसको भिन्न से प्रदर्शित करते हैं, जैसे 2/2, 3/3 अथवा 4/2 आदि। पाश्चात्य संगीत में लय स्वरूप को प्रदर्शित करने के लिए कोई अलग से लिपि नहीं है, वरन स्टाफ नोटेशन में स्वर के साथ ही इसको प्रदर्शित किया जाता है। इसको समझने के लिए स्टाफ नोटेशन को समझने की आवश्यकता है। स्टाफ स्वरलिपि की चर्चा को वही तक सीमित किया जाएगा जहाँ तक इसका सम्बन्ध लय स्वरूपों के लिए अनिवार्य है।

## 2.4 स्टाफ नोटेशन (स्टाफ स्वरलिपि पद्धति)

इसमें पांच सामान्तर रेखाओं पर एवं बीच में लय को प्रदर्शित किया जाता है। इन पांच रेखाओं के समूह को स्टाफ कहा जाता है जिससे इसको स्टाफ स्वरलिपि कहा गया। स्वरों के लिए अण्डाकार चिन्ह का प्रयोग किया जाता है जिसे सेमी बीव्र(𝅝) कहा जाता है एवं इसका काल प्रमाण एक मात्रा का होता है।

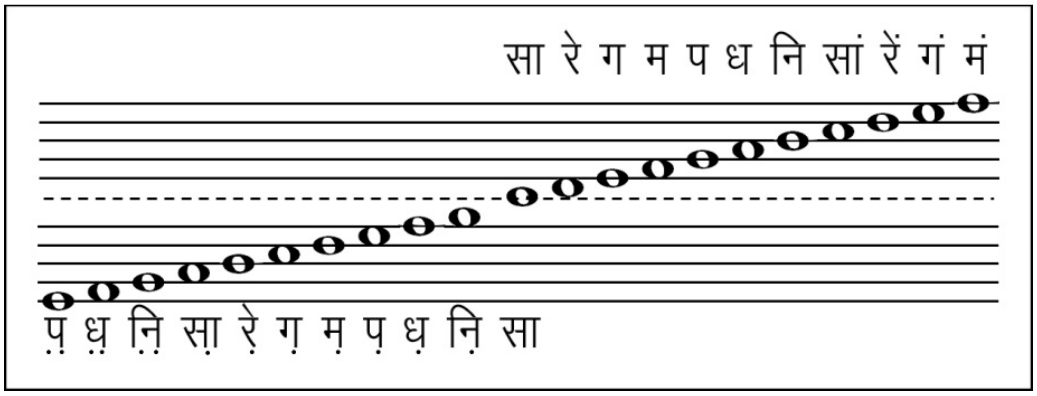


उपर ग्यारह रेखाओं के माध्यम से मध्य, मन्द्र एवं तार सप्तक के स्वरों को प्रदर्शित किया गया एवं प्रत्येक स्वर का काल प्रमाण एक मात्रा का है। इन ग्यारह रेखाओं के समूह को ग्रान्ड स्टाफ कहा जाता है। मध्य सप्तक के सा को Dotted सपदम बिन्दु वाली रेखा पर रखा गया है, उसके बाद क्रम से रे, ग, म, ध, नी, सा, रें, गं, मं स्वरों को रेखा के बीच में एवं उपर रखा गया है। सां रें गं में स्वर तान सप्तक को प्रदर्शित करते हैं। इसी प्रकार नीचे स्वर के क्रम भी इसी प्रकार से है जिसमें नी़ ध़ प़ म़ ग़ रे़ मन्द्र स्वर एवं इसके बाद सा नी ध प स्वर अति मन्द्र सप्तक के स्वर हैं। पाश्चात्य संगीत में अति तार सप्तक एवं अति मन्द्र सप्तक के स्वरों का भी प्रयोग पाया जाता है, जबकि भारतीय संगीत केवल मन्द्र, मध्य एवं तार सप्तक में ही स्वरों का प्रयोग किया जाता है। यदि ऐसी रचना लिखनी हो जिसमें सबसे नीचे का स्वर मध्य सप्तक का सा हो अथवा सबसे उँचा स्वर मध्य सा है तो इस प्रकार केवल पांच रेखाओं का ही प्रयोग करते हैं एवं स्वर लिखने से पहले स्टाफ की रेखाओं पर क्रमशः ट्रेबल एवं बास के चिन्ह लगाते हैं, जिन्हें क्लेफ कहा जाता है। ट्रेबल क्लेफ एवं बास क्लेफ को आप निम्न रेखा चित्र के माध्यम से समझेंगेः–

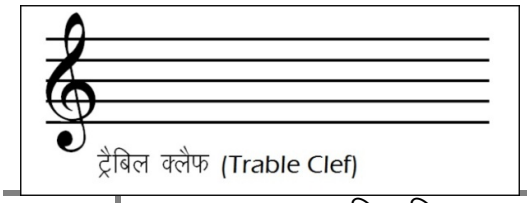


जब मध्य सा पॉच रेखाओं से नीचे रहता है तो इस बात को प्रकट करने वाले चिन्ह को 'ट्रैबिल क्लैफ' कहते हैं। इसका चिन्ह बाएं है।

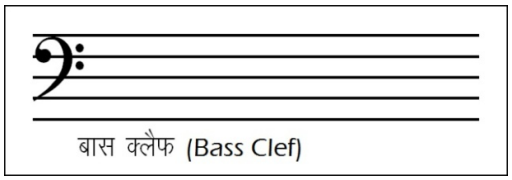
बास क्लैफ (Bass Clef)

जब मध्य सा पॉच रेखाओं के ऊपर रहता है तो इस बात को प्रकट करने के लिये जिस चिन्ह का प्रयोग किया जाता है उसे 'बास क्लैफ' (Bass clef) कहते हैं। इसका चिन्ह बाएं है।

पाश्चात्य संगीत एवं भारतीय संगीत की पद्धति में एक विशेष अन्तर यह है कि पाश्चात्य संगीत में सा एवं प अचल नहीं है तथा सा एवं प भी एक टोन उपर या नीचे हो सकता है। पाश्चात्य संगीत में एक स्वर के बराबर वाले स्वर की दूरी को एक सेमीटोन और जब दो सेमीटोन की दूरी जुड़ जाती है तो उसे एक टोन कहा जाता है। अर्थात शुद्ध सा से शुद्ध रे तक की दूरी एक टोन होगी। भारतीय संगीत में रे, ग, ध, नी स्वरों के कोमल स्वर एवं म तीव्र स्वर होते हैं। पाश्चात्य संगीत में फ्लैट एवं शार्प स्वर होते हैं। शुद्ध स्वर से एक सेमीटोन नीचे फ्लैट एवं एक सेमीटोन उपर शार्प स्वर होते हैं। फ्लैट स्वर को ♭ चिन्ह एवं शार्प स्वर को ♯ से प्रदर्शित करते हैं जिनको स्वर से पहले लिखते हैं। स्वरों के लय स्वरूप को Time signature (टाइम सिग्नेचेर) से प्रदर्शित करते हैं।

**2.4.1 Time Signature (टाइम सिग्नेचर)** – खण्डों में स्वरों की मात्रा संख्या को प्रदर्शित करने के लिए Time signature (टाइम सिग्नेचेर) का प्रयोग करते है जिसको भिन्न संख्या(Fraction Number) से प्रदर्शित करते हैं। इस टाइम सिग्नेचर से ही रिदम को प्रदर्शित किया जाता है। भिन्न की उपर की संख्या प्रत्येक खण्ड में दिए गए स्वरों की संख्या एवं नीचे की संख्या स्वर की मात्राओं को प्रदर्शित करती है। 2/2 टाइम सिग्नेचर में प्रत्येक खण्ड में दो–दो स्वर हैं एवं स्वरों की मात्रा भी दो–दो है अथवा 2/4 में प्रत्येक खण्ड में दो–दो स्वर हैं एवं स्वरों की मात्रा चार–चार की है। पाश्चात्य संगीत में साधारण काल( Simple Time), डयुपल टाइम, ट्रिपल टाइम एवं क्वाड्रपुल टाइम आदि प्रयोग किए जाते हैं।

**2.4.2 Simple Time (सिम्पल टाइम)** – इसको साधारण काल भी कहा जा सकता है। प्रत्येक बीट में सेमी ब्रीव के साधारण भाग, मिनिम, क्वेवर और क्रोश होने पर सिम्पल टाइम कहा जाता है।

**2.4.3 Duple Time (डयुपल टाइम)** – जब एक बार में दो स्वर हो तो उसे डयुपल टाइम कहते हैं। ये 2/2 , 2/4 और 2/8 के टाइम सिग्नेचर से प्रदर्शित करते हैं जो निम्न प्रकार से है।

इसी प्रकार $\frac{2}{2}$ का अर्थ है–

इसी प्रकार $\frac{2}{4}$ का अर्थ है–

$\frac{2}{8}$ का अर्थ है–

पहले उदाहरण 2/2 का अर्थ है एक खण्ड में दो–दो स्वर है जो दो–दो मात्रा के हैं। दूसरे उदाहरण का अर्थ है कि इसमें प्रत्येक खण्ड में दो–दो स्वर है जो चार–चार मात्रा के है एवं तीसरे उदाहरण का अर्थ है कि प्रत्येक खण्ड में दो–दो स्वर हैं जो कि प्रत्येक स्वर आठ–आठ मात्रा का है।

भारतीय संगीत के सन्दर्भ इनको निम्न प्रकार प्रदर्शित किया जाएगा।

1. 2/2 – । 𝅗𝅥 𝅗𝅥 ।

स्वर के माध्यम से – । सासा सासा।
तबले के बोलों के माध्यम से – । धागे धागे।

2. 2/4 – । ♩ ♩ ।

स्वर के माध्यम से – । सासासासा सासासासा।
तबले के बोलों के माध्यम से – । धागे धागे धागे धागे।

3. 2/8 – । ♪ ♪ ।

स्वर के माध्यम से – । सासासासासासासा सासासासासासा।
तबले के बोलों के माध्यम से – । धागेधागेधागेधागेधागे धागेधागेधागेधागेधागे।

**2.4.4 Triple Time (ट्रिपल टाइम)** – जब एक बार में तीन स्वर हों तो उसे ट्रिपल टाइम कहते हैं। इसको 3/2, 3/4 एवं 3/8 टाइम सिग्नेचर से प्रदर्शित करते हैं जो निम्न प्रकार से हैं :–

$\frac{3}{2}$ का अर्थ है–

$\frac{3}{4}$ का अर्थ है–

$\frac{3}{8}$ का अर्थ है–

पहले उदहारण में खण्ड में तीन स्वर हैं एवं प्रत्येक स्वर दो–दो मात्रा का है। दूसरे

उदाहरण में प्रत्येक खण्ड में तीन स्वर हैं एवं प्रत्येक स्वर चार–चार मात्रा का है एवं तीसरे उदाहरण से स्पष्ट है कि प्रत्येक खण्ड मे तीन स्वर हैं एवं प्रत्येक स्वर आठ–आठ मात्रा का है।

**2.4.5 Quadruple Time (क्वाड्रपुल टाइम)** – इसमें प्रत्येक खण्ड में चार स्वर होते हैं जिनको 4/2, 4/4, 4/8 के टाइम सिग्नेचर से प्रदर्शित करते हैं। जो निम्न प्रकार से हैं :–

$\frac{4}{2}$ का अर्थ है– 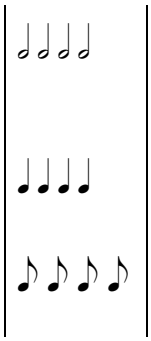

$\frac{4}{4}$ का अर्थ है– 

$\frac{4}{8}$ का अर्थ है– 

पहले उदहारण में एक खण्ड में चार स्वर हैं एवं प्रत्येक स्वर दो–दो मात्रा का है। दूसरे उदाहरण में एक खण्ड में चार स्वर हैं एवं प्रत्येक स्वर चार–चार मात्रा का है एवं तीसरे उदाहरण में एक खण्ड में चार स्वर हैं एवं प्रत्येक स्वर आठ–आठ मात्रा का है।

डयुपल टाइम(Duple Time) को अगर भारतीय ताल पद्धति के सन्दर्भ में ले तो इसके अन्तर्गत दो–दो मात्रा के विभाग की तालें आएंगी, जैसे – एकताल, आड़ाचारताल आदि। डयुपल टाइम में पहले भेद के अनुसार प्रत्येक भाग में दो–दो मात्राऐं हैं अर्थात दुगुन के बोल, दूसरे भेद में प्रत्येक मात्रा में चार–चार मात्राएं अर्थात चौगुन के बोल एवं तीसरे भेद में प्रत्येक मात्रा में आठ–आठ मात्राएं अर्थात अठगुन के बोल हैं। ट्रिपल टाइम भारतीय ताल के सन्दर्भ में दादरा ताल है एवं क्वाड्रपुल टाइम की तालें कहरवा, तीनताल, तिलवाड़ा, पंजाबी आदि तालें हैं, क्योंकि प्रत्येक विभाग में चार–चार मात्राऐं है। पहले, दूसरे एवं तीसरे भेद में क्रमशः दुगुन, चौगुन एवं अठगुन बोलों का प्रयोग होगा।

**2.4.6 Common Time (कामन टाइम)** – क्वाड्रपुल टाइम के दूसरे भेद को कामन टाइम कहते हैं। इसमें एक खण्ड में चार स्वर एवं प्रत्येक स्वर में चार–चार स्वर होते हैं, जिसको 4/4 टाइम सिग्नेचर से प्रदर्शित करते हैं।

पाश्चात्य संगीत में भारतीय संगीत की भांति ताल नहीं है। केवल रिदम ही पाश्चात्य संगीत में ताल के रूप में विद्यमान है। उदाहरण के लिए भारतीय संगीत की कहरवा ताल आठ मात्रा की ताल है। इन आठ मात्राओं में बोलों के परिवर्तन से एवं उनके वजन के परिर्वतन से कहरवा के विभिन्न भेद प्राप्त हो जाते हैं यद्यपि वह कहरवा ही कहलाता है। सुगम संगीत की विभिन्न विद्याओं में आवश्यकतानुसार कहरवा ताल के भेद प्रयोग किए जाते हैं। पाश्चात्य संगीत में यही भेद विभिन्न रिदम होते हैं तथा इन रिदम का प्रयोग सीमित है। भारतीय संगीत की भांति विभिन्न अवनद्य वाद्यों पर उनकी ताल की रचना, लय एवं लयकारी के प्रयोग, अवनद्य वाद्य की संगीत एवं कलाकार द्वारा अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए एकल वादन जैसी कोई विधा पाश्चात्य संगीत में ताल के सन्दर्भ में नहीं है। पाश्चात्य संगीत में तो गिटार पर वैम्पिंग(Vamping) के द्वारा भी रिदम प्रदर्शित कर दिया जाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय संगीत की तुलना में पाश्चात्य संगीत में अवनद्य वाद्यों का विशेष महत्व नहीं है।

## 2.5 पाश्चात्य संगीत के अवनद्य वाद्य एवं उनकी उपयोगिता

पाश्चात्य संगीत में अवनद्य वाद्य, Percussion Instrument के अन्तर्गत आते हैं जिनको मैमब्रोनोफोन(Membronophone) कहा जाता है। इनके मुख पर खाल मडी़ होती है एवं ये वाद्य हाथ एवं छडी़ की सहायता से आघात करके बजाए जाते हैं। परकशन के अन्तर्गत सिममबल(Cymble), गौंग(Gong) एवं जाइलोफोन(Xylophone) भी आता है। जाइलोफोन(Xylophone) को Pitched Percussion अर्थात स्वर वाला परकशन कहा जाता है। भारतीय संगीत के सन्दर्भ में वाद्यों के वर्गीकरण के अनुसार सिम्बल अथवा गौंग जिनको झांझ कहा जाता है, घन वाद्य के अन्तर्गत आते हैं। इसी श्रेणी में मंजीरा, घंटा, घंटीयां भी हैं। पाश्चात्य संगीत में अवनद्य वाद्यों को Drum भी कहा जाता है एवं अंग्रेजी में तबला जोडी को Pair of Drum से सम्बोधित करते हैं। यहाँ पर केवल पाश्चात्य संगीत के अवनद्य वाद्य अथवा ड्रम का ही विवरण प्रस्तुत किया जाएगा। पाश्चात्य संगीत में जिन अवनद्य वाद्यों का प्रयोग किया जाता है उनका विवरण निम्न हैः–

**2.5.1 Bongo Drum (बौंगो ड्रम)** – इसका जन्म क्यूबा के पूर्वी भाग में हुआ। यह एक जोडी के रूप में होता है जो एक दूसरे से जुडे होते हैं। इसमें एक बडा एवं एक छोटा होता है। इसको स्पैनिश बौंगो भी कहा जाता है। स्पैनिश भाषा में बड़े भाग को हेम्ब्रा(Hembra) जो की स्त्रीलिंग का घोतक माना गया है एवं छोटा भाग माचो(Macho) पुल्लिंग माना गया है। इसको घुटने के बीच में रखकर हथेली एवं अंगुलियों के आधात से बजाया जाता है। इसकी भौतिक रचना चित्र से स्पष्ट हो जाएगी।

**BONGO DRUM**

**2.5.2 Congo Drm (कौंगो ड्रम)** – यह बौंगों की भांति परन्तु लम्बा होता है। यह दो, तीन एवं चार ड्रम से मिलकर बनता है। इसको स्टैण्ड पर रखकर हथेली एवं अंगुलियों के आघात से बजाते हैं। इसकी भौतिक रचना निम्न चित्र से स्पष्ट हो जाएगी। यह क्यूबा देश का प्रसिद्ध वाद्य है। कौंगो बजाने वालों को कौन्गुयरेस(Congueros) कहा जाता है। क्यूबा के कार्निवाल में कौंगो रिदम का प्रयोग होता था, यही से इस वाद्य का नाम कौंगो पडा। कौंगो वाद्य लैटिन संगीत का बहुत प्रचलित वाद्य है। इसका प्रयोग एफ्रो–कैरिबियन स्थान के संगीत में होता है एवं यह रुम्बा का प्रमुख वाद्य है। अमेरिका के प्रचलित संगीत में कौंगो का प्रयोग किया जाता है।

**CONGO DRUMS**

**2.5.3 Timpani or Kettle Drum (टिम्पैनी अथवा कैटिल ड्रम)** – टिम्पैनी इटैलियन शब्द है एवं इसको kettle Drum भी कहा जाता है। यह दो अथवा इससे अधिक वाद्यों का समूह होता है जिसको स्टैण्ड पर रखकर छड़ी (Stick) की सहायता से बजाया जाता है जिनको Timpani Stick अथवा Timpani Mallat कहा जाता है। टिम्पैनी, तांबा (Copper), अल्युमिनियम (Aluminium) अथवा Fible Glasss से बनाया जाता है। इसकी भौतिक संरचना निम्न चित्र से स्पष्ट हो जाएगी।

**TIMPANI OR KETTLE DRUM**

यह सैन्य बैण्ड का मुख्य वाद्य था एवं वही से इसका प्रयोग पाश्चात्य संगीत के वाद्य वृन्द (Orchestra) में प्रयोग किया जाने लगा। इसका प्रयोग पाश्चात्य संगीत के कार्यक्रम (Concert), मार्चिंग (Marching) एवं रौक बैण्ड (Rock Band) में किया जाता है। इस वाद्य को बजाने वाले को टिम्पैनिस्ट (Timpaniest) कहा जाता है। टिम्पैनिस्ट अपने वादन के बीच में Timpani stick को बदलता रहता है जिससे विभिन्न ध्वनियां प्राप्त होती हैं।

**2.5.4 Snare Drum or Side Drum (स्नेअर ड्रम अथवा साइड ड्रम)** – बौंगो, कौंगो एवं टिम्पैनी अथवा कैटिल ड्रम, ये सभी वाद्य एक मुंह वाले वाद्य है अर्थात इनके एक ही मुख पर खाल मढी रहती है। स्नेअर ड्रम अथवा साइड ड्रम के दोनों मुख पर चमड़ा मढा होता है, जिसको छड़ी की सहायता से एक ही मुख पर आघात कर बजाया जाता है। यह लकड़ी अथवा किसी धातु का 4 इंच से 16 इंच व्यास एवं 9 इंच से 16 इंच गहरा बना होता है। इसके दोनों मुखों पर मढे चमडे को पेंच से कसा जाता है। गहराई कम करने से इसका स्वर ऊंचा हो जाता है अतः इसकी गहराई स्वर के आवश्यकतानुसार रखी जाती है। इसको ब्रिटिश एव स्काटलैण्ड में Side Drum कहा जाता है। इसका प्रयोग Drum Set के साथ एवं स्वतंत्र रूप से किया जाता है। यह Drum Set का मुख्य वाद्य है। इस वाद्य पर छड़ी से ढीले हाथ से आघात करने पर कम्पित ध्वनि प्राप्त की जाती है जिसे रोल (Roll) करना कहते हैं, जो कि इस वाद्य की वादन शैली की विशेषता है। आरकेस्ट्रा (Orchestra), पौप संगीत (Pop Music) एवं Rock Music में इसका प्रयोग Drum Set में किया जाता है। पाइप बैण्ड (Pipe Band) एवं Brass Band में इसका

प्रयोग होता है, जिसमें वादक केवल इसी को बजाता है। सैन्य संगीत में Pipe Band एवं Bass band का प्रयोग मार्चिंग (Marching) के लिए किया जाता है। शादी–विवाह में बजने वाले ब्रास बैण्ड में भी इसका प्रयोग देखा जाता है। इसकी भौतिक संरचना निम्न चित्र से स्पष्ट हो जाएगी।

**SNARE DRUM OR SIDE DRUM**

**2.5.5 Bass Drum (बास ड्रम)** – पाश्चात्य संगीत में प्रयोग होने वाला यह सबसे बडे आकार का ड्रम है जो दो मुंह वाला है। अर्थात इसके दोनों मुख पर चमड़ा मढा होता है। इससे नीचे स्वर की ध्वनि प्राप्त होती है। इसीलिए इसको बास ड्रम कहा जाता है। इसको एक विशेष छड़ी जिस पर एक तरफ गोल आकार था मुलायम कपडे अथवा फोम का गोला लगा होता, से बजाया जाता है। यह साइड ड्रम के साथ बजने पर उसी प्रकार उंचे एवं नीचे स्वर की ध्वनियों का मेल बनता है, जिस प्रकार तबला वाद्य में दाहिने एवं बायें तबले से समन्वित ध्वनि प्राप्त होती है। ड्रम सेट में पैडिल की सहायता से छडी को बास ड्रम पर आघात कर ध्वनि उत्पन्न की जाती है। अतः इसको Kick Drum भी कहा जाता है। इसका प्रयोग ड्रम सेट में बैठकर किया जाता है। यह मार्चिंग के समय गले में लटकाकर बजाया जाता है। इसका प्रयोग पाइप बैण्ड, ब्रास बैण्ड दोनों में ही किया जाता है। विद्यालयों में इसका प्रयोग P.T. प्रदर्शन के समय लय दिखाने के लिए भी किया जाता है। इसकी भौतिक रचना निम्न चित्र से स्पष्ट हो जाएगी।

**BASS DRUM** **DRUM SET**

**2.5.6 Tamborin टैम्बोरिन** – यह एक गोल आकार का चमडा मडा हुआ वाद्य है एवं इसके घेरे में धातु के गोल छल्ले लगे होते हैं जिससे इसको बजाने से मधुर ध्वनि उत्पन्न होती है। इसको एक हाथ से पकड़कर दूसरे हाथ से बजाया जाता है। भारतीय संगीत में इसके जैसा वाद्य ढपली है। परन्तु ढपली में धातु के गोल छल्लों का होना अनिवार्य नहीं है। एक अन्य भारतीय वाद्य खंजरी इसके जैसा है परन्तु इसमें चमडा मड़ा नहीं होता है केवल धातु के छल्ले ही होते हैं। ध्वनि की आवश्यकतानुसार इसका आकार बड़ा अथवा छोटा निर्धारित किया जाता है। इसकी भौतिक

रचना दिए गए चित्र से स्पष्ट हो जाएगी। पाश्चात्य संगीत में इसका प्रयोग सभी प्रकार के संगीत–लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत, पौप संगीत, रौक संगीत आदि में किया जाता है।

**TAMBORIN**

**अभ्यास प्रश्न**

1. डयुपल टाइम को कैसे प्रदर्शित करेंगे?
2. ट्रिपल टाइम को कैसे प्रदर्शित करेंगे?
3. क्वाड्रपुल टाइम को कैसे प्रदर्शित करेंगे?
4. सेमीब्रीव, मिनिम, क्रोशे एवं क्वेचर के चिन्ह को दर्शाइए।
5. बास क्लेफ एवं ट्रेबिल क्लेफ के चिन्हों को दर्शाइए।

## 2.6 सारांश

पाश्चात्य संगीत भारतवर्ष में बहुत अधिक प्रचलित है जिसका आधार भी भारतीय संगीत की भांति स्वर, लय एवं ताल है। इस इकाई के अध्ययन के पाश्चात आप पाश्चात्य संगीत के सन्दर्भ में ताल का स्वरूप क्या है जान गए होंगे। पाश्चात्य संगीत में ताल अथवा रिदम के लिए कोई अलग से लिपि पद्धति नहीं है वरन स्वर की मात्रा एवं रिदम को एक ही चिन्ह से प्रदर्शित करते हैं। आप इस इकाई के माध्यम से स्टाफ स्वर लिपि भी समझ गए हैं। पाश्चात्य संगीत में प्रयोग होने वाले अवनद्य वाद्यों के विषय में भी आप इकाई के माध्यम से जान गए हैं। अतः इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप पाश्चात्य लय–ताल के स्परूप को समझ चुके होंगे एवं पाश्चात्य संगीत को समझकर इसका आनन्द ले सकेंगे।

## 2.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. 2/2, 2/4, 2/8
2. 3/2, 3/4, 3/8
3. 4/2, 4/4, 4/8
4. सेमीब्रीव – 𝅝, मिनिम – 𝅗𝅥, क्रोशे – ♩, क्वेवर – ♪
5. बास क्लेफ

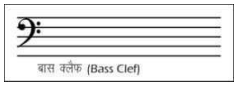


ट्रेबिल क्लेफ

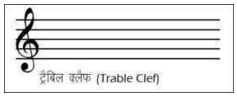

## 2.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वसन्त, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय, हाथरस।
2. Wikipedia Encyclopedia– List of Musical Instrument.
3. साभार गूगल।

## 2.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. पाश्चात्य संगीत के सन्दर्भ में ताल की व्याख्या कीजिए।
2. पाश्चात्य संगीत में प्रयोग होने वाले अवनद्य वाद्यों के विषय में लिखिए।

## इकाई 3 – तिपल्ली, चौपल्ली, फरमाइशी, कमाली, नौहक्का, तिहाई(दमदार, बेदम, चक्करदार) की व्याख्या उदाहरण सहित।

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 तिपल्ली
3.4 चौपल्ली
3.5 फरमाइशी
3.6 कमाली
3.7 नौहक्का
3.8 तिहाई(दमदार, बेदम, चक्करदार)
3.9 सारांश
3.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.11 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री
3.12 निबन्धात्मक प्रश्न

### 3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई प्रदर्शन कला–संगीत में स्नातकोत्तर, तृतीय सेमेस्टर (एम0पी0ए0एम0टी0–602) पाठ्यक्रम की तीसरी इकाई है। इससे पूर्व की इकाईयों में आप उत्तर भारत व दक्षिण भारत के अवनद्य वाद्य व उनकी उपयोगिता से परिचित हो गए होंगे। आप पाश्चात्य संगीत के सन्दर्भ में ताल, पाश्चात्य संगीत के अवनद्य वाद्य एवं उनकी उपयोगिता के विषय में भी जान चुके होंगे।

इस इकाई में पखावज व तबले की रचनाओं जैसे तिपल्ली, चौपल्ली, फरमाइशी, कमाली, नौहक्का, तिहाई(दमदार, बेदम, चक्करदार) के विषय में बताया गया है। इन रचनाओं के सही प्रयोग से कलाकार की कुशलता का परिचय मिलता है। इस इकाई में पखावज व तबले की रचनाओं को उदाहरण सहित लिपिबद्ध भी किया गया है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप पखावज व तबले की रचनाओं जैसे तिपल्ली, चौपल्ली, फरमाइशी, कमाली, नौहक्का, तिहाई(दमदार, बेदम, चक्करदार) से परिचित हो सकेंगे। पखावज व तबले की रचनाओं को समझकर पाठ्यक्रम की तालों के अतिरिक्त तालों में भी इन रचनाएं को खुद बना सकेंगे व लिपिबद्ध भी कर सकेंगे।

### 3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप :–

1. पखावज व तबले की रचनाओं को स्पष्ट रूप से समझ पाएंगे।
2. पखावज व तबले की रचनाओं को समझ कर क्रियात्मक रूप में सफल प्रस्तुति दे सकेंगे।
3. बता सकेंगे की इन रचनाओं का क्या महत्व है और यह क्यों महत्वपूर्ण हैं।
4. पखावज व तबले की रचनाओं की विशेषताओं से परिचित हो पाएंगे।

## 3.3 तिपल्ली

जैसा कि तिपल्ली से स्पष्ट है कि तीन पल्ले वाली रचना। ये तीन पल्ले अलग–अलग दिखाई देने आवश्यक हैं जो कि लय–भेद एवं गति–भेद के आधार पर ही सम्भव है। अतः ऐसी रचना जिसमें तीन पल्ले हों एवं जिनमें अलग–अलग लयकारी बनती हो तिपल्ली कहलाती है। तिपल्ली दो प्रकार की हो सकती हैं। प्रथम वह जिसमें एक ही बोल की तीन लयकारी होती है तथा द्वितीय वह जिसमें भिन्न बोलों की तीन लयकारियां हों। पहले प्रकार की तिपल्ली में एक ही बोल समूह लेकर उसमें तीन अलग–अलग लयकारी प्रस्तुत करते हैं तथा प्रत्येक लयकारी के बाद धा होता है जिसका काल प्रमाण लयकारियों के आधार पर होता है। पहले प्रकार की तिपल्ली निम्न उदाहरण से स्पष्ट हो जाएगी।

| | | | |
|---|---|---|---|
| दींगदीं | ऽगतकि | टतकिट | धात्रकधि |
| × | | | |
| किटतक | गदीगिन | धाऽतिऽ | धाऽऽदिंऽग |
| 2 | | | |
| दिऽगताकिट | ताकिटधात्रक | धिकिटकतग | दीगिनधाऽति |
| 0 | | | |
| ऽधाऽदीऽगदी | ऽगतकिटटि | धात्रकधिकिटकता | गदिगिनधाऽतीऽ |
| 3 | | | |
| धा | | | |
| × | | | |

उपरोक्त तिपल्ली में *दींऽग दींऽग तकिट तकिट धात्रक धिकिट कतग दीगिन धाती धा* बोल को पहले पल्ले में चौगुन की लयकारी, दूसरे पल्ले में छः गुन लयकारी तथा अन्तिम पल्ले में पहले की लयकारी की दुगुन अथवा अठगुन की लयकारी दिखाई गई है।

दूसरे प्रकार की तिपल्ली निम्न उदाहरण से स्पष्ट होगी।

| | | | |
|---|---|---|---|
| धाऽन | धिकिट | तकिट | धिकिट |
| × | | | |
| धात्रक | धिकिट | क्ताग | दिगिन |
| 2 | | | |
| धात्रकधि | किटकत | गदिगिन | धाऽकत |
| 0 | | | |
| धाऽनधिकिट | तकिटधिकिट | धात्रकधिकिट | कतागदिगिन |
| 3 | | | |
| धा | | | |
| × | | | |

उपरोक्त तिपल्ली में पहला पल्ला आठ मात्रा का है जिसमें तिगुन की लयकारी है, दूसरा पल्ला चार मात्रा का जिसमें चौगुन की लयकारी तथा तीसरा पल्ला जो कि चार मात्रा का है में छः गुन लयकारी है।

## 3.4 चौपल्ली

तिपल्ली की भांति ही चौपल्ली में चार पल्ले होते हैं जिसमें चार प्रकार की लयकारी प्रदर्शित करते हैं। एक ही बोल की चार लयकारी का उदाहरण निम्न है जो कि तीनताल में निबद्ध है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| धाऽनधि | किटतकि | टधिकिट | धात्रकधि |
| × | | | |
| तिटकता | गदीगिन | धाधाऽन | धिकिटतकिट |
| 2 | | | |
| धिकिटधात्रक | धितिटकताग | दिगिनधाधाऽनधि | किटतकिटधिकिट |
| 0 | | | |
| धात्रकधितिकता | गदीगिनधा | धाऽनधिकिटतकिटधिकिट | धात्रकधितिटकतागदीगिन |
| 3 | | | |
| धा | | | |
| × | | | |

## 3.5 फरमाइशी

किसी भी चक्करदार रचना में तीन चक्कर होते हैं। इसमें तिहाई युक्त बोल समूह को तीन बार प्रयोग कर किसी भी ताल में सम पर आया जाता है। प्रत्येक चक्कर समान मात्राओं का होता है, जिसको चक्करदार कहा जाता है। फरमाइशी चक्करदार की विशेषता होती है कि प्रथम चक्कर के तिहाई का पहला धा पहली बार सम पर, दूसरे चक्कर में तिहाई का दूसरा धा सम पर तथा अन्त में तीसरा धा सम पर आता है। फरमाइशी रचना पांच आवृत्ति की होती है। सम्भवतः कभी किसी ने इस प्रकार की चक्करदार की फरमाइश की होगी उसी कारण इसका नाम फरमाइशी चक्करदार पड़ा। इसको आप निम्न उदाहरण से समझेंगे।

| **बोल तिहाई– पहला चक्कर** | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धातिरकिटतक | **तातिरकिटतक** | **ताक्ड़ान** | **ताक्ड़ान** | **धा** | **धातिरकिटतक** | **तातिरकिटतक** | **ताक्ड़ान** |
| | | | | × | | | |
| ताक्ड़ान | **धा** | **धातिरकिटतक** | **तातिरकिटतक** | **ताक्ड़ान** | **ताक्ड़ान** | **धा** | |
| | × | | | | | × | |
| **बोल तिहाई–दूसरा चक्कर** | | | | | | | |
| धातिरकिटतक | **तातिरकिटतक** | **ताक्ड़ान** | **ताक्ड़ान** | **धा** | **धातिरकिटतक** | **तातिरकिटतक** | **ताक्ड़ान** |
| | | | | × | | | |
| ताक्ड़ान | **धा** | **धातिरकिटतक** | **तातिरकिटतक** | **ताक्ड़ान** | **ताक्ड़ान** | **धा** | |
| | × | | | | | × | |
| **बोल तिहाई अन्तिम चक्कर** | | | | | | | |
| धातिरकिटतक | **तातिरकिटतक** | **ताक्ड़ान** | **ताक्ड़ान** | **धा** | **धातिरकिटतक** | **तातिरकिटतक** | **ताक्ड़ान** |
| | | | | × | | | |
| ताक्ड़ान | **धा** | **धातिरकिटतक** | **तातिरकिटतक** | **ताक्ड़ान** | **ताक्ड़ान** | **धा** | |
| | × | | | | | × | |

तिहाई के साथ गत, परन अथवा टुकड़ा जिस प्रकार के बोल जोड़े जाते है उसे उसी नाम से नाम से जाना जाता है। जैसे फरमाइशी चक्करदार टुक्ड़ा, फरमाइशी चक्करदार परन एवं फरमाइशी चक्करदार गत। उदाहरण तीनताल में फरमाइशी चक्करदार गतः–

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दींगदीं | नाकत | दींगदीं | नाकत | तकट | धात्रक | दींगदी | नाऽऽ |
| × | | | | 2 | | | |
| धाऽन | धाड़न | तकितिर | किटतक | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताकड़ान | ताक्ड़ान |
| 0 | | | | 3 | | | |
| धा | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताक्ड़ान | ताक्ड़ान | धा | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक |
| × | | | | 2 | | | |
| ताक्ड़ान | ताक्ड़ान | धा | दींगदी | नाकत | दींगदीं | नाकत | तकट |
| 0 | | | | 3 | | | |
| धात्रक | दींगदीं | नाऽऽ | धाडन | धाडन | ताकेतिर | किटतक | धातिरकिटतक |
| × | | | | 2 | | | |
| तारिकिटतक | ताक्डान | ताक्डान | धा | धतिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताक्ड़ान | ताक्ड़ान |
| 0 | | | | 3 | | | |
| धा | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताक्ड़ान | ताक्ड़ान | धा | दींगदी | नाकत |
| × | | | | 2 | | | |
| दींगदीं | नाकत | तकट | धात्रक | दींगदी | नाऽऽ | धाडन | धाडन |
| 0 | | | | 3 | | | |
| ताकेतिर | किटतक | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताक्ड़ान | ताक्ड़ान | धा | धातिरकिटतक |
| × | | | | 2 | | | |
| तातिरकिटतक | ताक्डान | ताक्ड़ान | धा | धातिरकिततक | तातिरकिटतक | ताक्ड़ान | ताक्ड़ान |
| 0 | | | | 3 | | | |
| धा | | | | | | | |
| × | | | | | | | |

**तीनताल** की फरमाइशी चक्करदार का एक चक्कर 27 मात्रा का होता है, इस प्रकार कुल मात्राएं 80 होती हैं। तीनताल की फरमाइशी चक्करदार झपताल में भी प्रयोग की जाती है जो कि झपताल की आठ आवृत्ति में आएगी। तीनताल की फरमाइशी चक्करदार में बारह मात्रा का बोल तथा चौदह मात्रा की तिहाई होती है एवं तिहाई का आखिरी धा सताइसवीं मात्रा पर आता है। इसी प्रकार झपताल की फरमाइशी चक्करदार में आठ मात्रा का बोल तथा आठ मात्रा की तिहाई होती है तथा तिहाई का आखिरी धा सत्रहवीं मात्रा पर होता है। झपताल की फरमाइशी चक्करदार का एक चक्कर को तीनताल की एक आवृत्ति में प्रयोग किया जा सकता है। चौदह मात्रा की तालों की फरमाइशी चक्करदार में बारह मात्रा के बोल के साथ ग्यारह मात्रा की दमदार तिहाई प्रयोग की जाती है। इसका एक चक्कर 69 मात्रा का होता है तथा प्रत्येक चक्कर के बाद एक मात्रा का विश्राम किया जाता है। उपरोक्त को आप निम्न गणितीय सूत्र से समझ सकेंगे।

**सोलह मात्रा की तालों की फरमाइशी चक्करदार**

बोल (12 मात्रा) + तिहाई (14 मात्रा) = 26+1 (धा) = 27 ×3 = 80+1 (धा)

**दस मात्रा की तालों की फरमाइशी चक्करदार**

बोल (8मात्रा) + तिहाई ( 8 मात्रा) = 16+1 (धा) = 17×3 = 50 + 1 (धा)

**चौदह मात्रा की तालों की फरमाइशी चक्करदार**

बोल (12 मात्रा) + तिहाई (11 मात्रा) = 23 + 1 मात्रा विश्राम (प्रत्येक चक्कर के बाद)= 70+ 1 (धा)

## 3.6 कमाली चक्करदार

फरमाइशी चक्करदार की भांति ही कमाली चक्करदार में तिहाई में विशेषता रहती है। कमाली चक्करदार में जो तिहाई होती है उसके प्रत्येक पल्ले में तीन धा होते हैं। इस प्रकार चक्करदार के एक पल्ले की तिहाई में नौ धा होते हैं एवं सम्पूर्ण चक्करदार में सताईस धा होते हैं। इन सताइस धा में प्रथम आवर्तन में पहला धा सम पर, दूसरे पल्ले में चौदहवां धा सम पर तथा अन्त में सताइसवां धा अथवा अन्तिम धा सम पर आता है। तिहाई की यही विशेषता इस प्रकार की चक्करदार को कमाली चक्करदार बनाती है। तिहाई के साथ जिस प्रकार के बोल जैसे (टुकडा, परन एवं गत) जोड़े जाते हैं उसे उसी नाम से जाना जाता है। जैसे कमाली चक्करदार टुक्डा, कमाली चक्करदार परन, कमाली चक्करदार गत।

| पहला चक्कर– बोल | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धिरधिरकिटतक | धा | धा | धा | धिरधिरकिटतक | धा | धा | धा |
| | × | | | | | | |
| धिरधिरकिटतक | धा | धा | धा | | | | |
| | | | | | | | |
| दूसरा चक्कर – | | | | | | | |
| बोल | धिरधिरकिटतक | धा | धा | धा | धिरधिरकिटतक | धा | धा |
| | | | | | | | × |
| धा | धिरधिरकिटतक | धा | धा | धा | | | |
| | | | | | | | |
| तीसरा चक्कर – | | | | | | | |
| बोल | धिरधिरकिटतक | धा | धा | धा | धिरधिरकिटतक | धा | धा |
| | | | | | | | |
| धा | धिरधिरकिटतक | धा | धा | धा | | | |
| | | | | × | | | |

<u>तीनताल में कमाली चक्करदार टुकडा</u>

| धिरधिरकिटतक | तकटधा | धिरधिरकिटतक | तकटधा |
|---|---|---|---|
| × | | | |
| धिरधिरकिटतक | तकटधा | तिट | कता |
| 2 | | | |
| गदी | गिन | धाऽधिरधिर | किटतकतकट |
| 0 | | | |
| धा | धिरधिरकिटतक | तातिरकिटतक | धिरधिरकिटतक |
| 3 | | | |
| धा | धा | धा | धिरधिरकिटतक |
| × | | | |

| धा | धा | धा | धिरधिरकिटतक |
|---|---|---|---|
| 2 | | | |
| धा | धा | धा | धिरधिरकिटतक |
| 0 | | | |
| तकटधा | धिरधिरकिटतक | तकटधा | धिरधिरकिटतक |
| 3 | | | |
| तकटधा | तिट | कता | गदी |
| × | | | |
| गिन | धाऽधिरधिर | किटतकतकट | धा |
| 2 | | | |
| धिरधिरकिटतक | तातिरकिटतक | धिरधिरकिटतक | धा |
| 0 | | | |
| धा | धा | धिरधिरकिटतक | धा |
| 3 | | | |
| धा | धा | धिरधिरकिटतक | धा |
| × | | | |
| धा | धा | धिरधिरकिटतक | तकटधा |
| 2 | | | |
| धिरधिरकिटतक | तकटधा | धिरधिरकिटतक | तकटधा |
| 0 | | | |
| तिट | कता | गदी | गिन |
| 3 | | | |
| धाऽधिरधिर | किटतकतकट | धा | धिरधिरकिटतक |
| × | | | |
| तातिरकिटतक | धिरधिरकिटतक | धा | धा |
| 2 | | | |
| धा | धिरधिरकिटतक | धा | धा |
| 0 | | | |
| धा | धिरधिरकिटतक | धा | धा |
| 3 | | | |
| धा | | | |
| × | | | |

## 3.7 नौहक्का

चक्करदार तिहाई को ही नौहक्का कहा जाता है क्योंकि इसमें नौ धा होते हैं। चक्करदार तिहाई युक्त बोल को नौहक्का बोल रचना कहते हैं। उदाहरण हेतु तीनताल में नौहक्का बोलः–

| | | | |
|---|---|---|---|
| दींदी | तिटतिट | धागेतिट | ताकेतिट |
| × | | | |
| कडधातिट | कऽताऽ | घेतिरकिटतक | ताक्ड़ान |
| 2 | | | |
| धा | घेतिरकिटतक | ताक्ड़ान | धा |
| 0 | | | |
| घेतिरकिटतक | ताक्डान | धा | घेतिरकिटतक |
| 3 | | | |
| ताक्डान | धा | घेतिरकिटतक | ताक्डान |
| × | | | |
| धा | घेतिरकिटतक | तक्डान | धा |
| 2 | | | |
| घेतिरकिटतक | ताक्डान | धा | घेतिरकिटतक |
| 0 | | | |
| ताक्डान | धा | घेतिरकिटतक | ताक्डान |
| 3 | | | |
| धा | | | |
| × | | | |

## 3.8 तिहाई

ऐसी रचना जिसमें एक प्रकार के बोल समूह को तीन बार प्रयोग कर सम पर आया जाता है तिहाई कहलाती है। इस प्रकार तिहाई के तीन पल्ले होते हैं एवं प्रत्येक पल्ले के तीन चक्कर के पश्चात सम पर आया जाता है। प्रत्येक पल्ले के पश्चात धा का प्रयोग होता है एवं अन्तिम धा सम पर आता है। तिहाई का प्रयोग समाप्ति का घोतक है। प्रत्येक रचना तिहाई से समाप्त की जाती हैं। तिहाई तीन प्रकार की होती है–दमदार, बेदमदार तथा चक्करदार।

**दमदार तिहाई** – ऐसी तिहाई जिसके पहले चक्कर एवं दूसरे चक्कर के धा में दम अथवा विश्राम दिया जाता है, दमदार तिहाई कहलाती है। उदाहरण–तीनताल में दमदार तिहाईः–

| | | | |
|---|---|---|---|
| धाऽतिर | किटतक | ताऽतिर | किटतक |
| × | | | |
| धा | S | धाऽतिर | किटतक |
| 2 | | | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ताऽतिर | किटतक | धा | ऽ |
| 0 | | | |
| धाऽतिर | किटतक | ताऽतिर | किटतक |
| 3 | | | |
| धा | | | |
| × | | | |

**बेदमदार तिहाई** – ऐसी तिहाई जिसमें पहले चक्कर एवं दूसरे चक्कर के धा पर विश्राम अथवा दम नहीं दिया जाता है, बेदम तिहाई कहलाती है। उदाहरणः–

| | | | |
|---|---|---|---|
| धाऽतिर | किटतक | ताऽतिर | किटतक |
| × | | | |
| धाती | धाीधाऽ | तिरकिट | तकताऽ |
| 2 | | | |
| तिरकिट | तकधा | तीधा | धाऽतिर |
| 0 | | | |
| किटतक | ताऽतिर | किटतक | धाती |
| 3 | | | |
| धा | | | |
| × | | | |

**चक्करदार तिहाई** – जब किसी तिहाई को तीन बार बजाकर सम पर आते हैं तो ऐसी तिहाई चक्करदार तिहाई कहलाती है। उदाहरण :–

| | | | |
|---|---|---|---|
| धातिरकिटतक | धाधातिट | किटतकधा | धातिरकिटतक |
| × | | | |
| धा | ऽ | धातिरकिटतक | धाधातिट |
| 2 | | | |
| किटतकधा | धातिरकिटतक | धा | ऽ |
| 0 | | | |
| धातिरकिटतक | धाधातिट | किटतकधा | धातिरकिटतक |
| 3 | | | |
| धा | | | |
| × | | | |

उदाहरण तीनताल में चक्करदार तिहाई का है जो बेदम तिहाई दमदार चक्करदार है। इस प्रकार चक्करदार के तिहाई के तीन भेद हो सकते हैंः–

1. दमदार तिहाई की बेदमदार चक्करदार
2. बेदम तिहाई की दमदार चक्करदार
3. बेदम तिहाई की बेदमदार चक्करदार

**दमदार तिहाई की बेदमदार चक्करदार तीनताल में**

| | | | |
|---|---|---|---|
| तिरकिट<br>× | धाऽ | तिरकिट | धाऽ |
| तिरकिट<br>2 | धातिर | किटधा | ऽतिर |
| किटधा<br>0 | ऽतिर | किटधा | तिरकिट |
| धा<br>3 | तिरकिट | धा | तिरकिट |
| धा<br>× | | | |

**बेदम तिहाई की बेदमदार चक्करदार तीनताल में**

| | | | |
|---|---|---|---|
| किटतकतिरकिट<br>× | धातीधाकिट | तकतिरकिटधा | तीधाकिटतक |
| तिरकिटधाती<br>2 | धाकिटतक | तकतिरकिटधा | तीधाकिटतक |
| किटधातीधा<br>0 | किटतकतिरकिट | धातीधा | किटतकतिरकिट |
| धातीधाकिट<br>3 | तकतिरकिटधा | तीधाकिटतक | तिरकिटधाती |
| धा<br>× | | | |

**अभ्यास प्रश्न**

1. फरमाइशी चक्करदार कितनी आवृत्ति की होती है?
2. तीनताल की फरमाइशी का एक पल्ला कितनी मात्रा का होता है?
3. झपताल की फरमाइशी का एक चक्कर का प्रयोग किस ताल में किया जा सकता है?
4. चौपल्ली में कितने पल्ले होते हैं?
5. चौदह मात्रा की ताल की फरमाइशी चक्करदार में कितनी मात्रा का बोल तथा कितनी मात्रा की तिहाई होती है?
6. तिहाई कितने प्रकार की होती है? नाम लिखिए।
7. चक्करदार तिहाई के कितने एवं कौन से भेद हो सकते हैं?
8. नौहक्का में कम से कम कितने धा होते हैं?

## 3.9 सारांश

**प्रस्तुत** इकाई के अध्ययन के पश्चात आप पखावज एवं तबले की विभिन्न रचनाओं जैसे तिपल्ली, चौपल्ली, फरमाइशी, कमाली, नौहक्का, तिहाई(दमदार, बेदम, चक्करदार) की परिभाषाओं से परिचित हो चुके होंगे। पूर्वज विद्वानों ने विभिन्न प्रकार के पखावज एवं तबले के वर्णों के संयोग से बोल रचित कर एवं लय–गति के विभिन्न प्रयोगों के आधार पर वादन हेतु रचनाये की थी। इन्हीं रचनाओं का बाद में नामकरण किया गया और वे पखावज एवं तबले की रचनाओं की शब्दावली बनी। इन शब्दावलियों की विद्वानों द्वारा व्याख्या की गई एवं इनको परिभाषा रूप में प्रस्तुत किया गया। परिभाषा रूप में आपने इस इकाई में तबले की रचनाओं का अध्ययन किया जिससे आप तबले के सैद्धान्तिक पक्ष को समझेंगे एवं इन रचनाओं का क्रियात्मक रूप में सफल प्रस्तुतीकरण कर पाएंगे। इन रचनाओं की रचना का गणितीय अध्ययन भी आपने किया। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप विभिन्न तालों में उपरोक्त रचनाओं का निर्माण करने में सक्षम होंगे तथा इनका प्रयोग भी कुशलता से कर सकेंगे।

## 3.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. पाँच आवृत्ति
2. 27 मात्रा
3. तीनताल
4. चार
5. बारह मात्रा का बोल तथा ग्यारह मात्रा की तिहाई
6. तीन प्रकार–दमदार, बेदमदार तथा चक्करदार
7. तीन भेद हो सकते हैंः–
    1. दमदार तिहाई की बेदमदार
    2. बेदम तिहाई की दमदार
    3. बेदम तिहाई की बेदमदार
8. नौ।

## 3.11 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. श्रीवास्तव, श्री गिरीश, ताल परिचय, संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. मिश्र, पं0 छोटे लाल, *तबला ग्रन्थ*, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
3. मिश्र, श्री विजय शंकर, *तबला पुराण*, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
4. राम, डॉ0 सुदर्शन, तबले के घराने, वादन शैलियाँ एवं बंदिशें।

## 3.12 निबन्धात्मक प्रश्न

1. पखावज व तबले की रचनाओं तिपल्ली, चौपल्ली व तिहाई(दमदार, बेदम, चक्करदार) को समझाइये।

इकाई 4 – पाठ्यक्रम की तालों का परिचय व तालों के ठेकों को दुगुन, तिगुन व चौगुन की लयकारी सहित लिपिबद्ध करना

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 तालों का परिचय
1.3.1 पंचमसवारी ताल का परिचय
1.3.2 झपताल का परिचय
3.3 दीपचन्दी ताल का परिचय
1.3.4 तीवरा ताल का परिचय
1.3.5 लक्ष्मी ताल का परिचय

1.4 तालों को लयकारियों में लिखना
1.4.1 पंचमसवारी ताल में लयकारी
1.4.2 झपताल में लयकारी
1.4.3 दीपचन्दी मे लयकारी
1.4.4 तीवरा ताल में लयकारी
1.4.5 लक्ष्मी ताल में लयकारी

1.5 सारांश
1.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
1.8 निबन्धात्मक प्रश्न

## 1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई प्रदर्शन कला–संगीत में स्नातकोत्तर, तृतीय सेमेस्टर (एम0पी0ए0एम0टी0–602) पाठ्यक्रम के चौथी इकाई है। इससे पहले की इकाईयों के अध्ययन के बाद आप विद्वान संगीतज्ञों के महत्वपूर्ण योगदान तथा उनकी संगीत साधना के प्रति लगन एवं परिश्रम को जान चुके होंगे। आप भारतीय संगीत ग्रन्थों का ज्ञान भी प्राप्त कर चुके होंगे।

इस इकाई में पाठ्यक्रम की तालों का परिचय व उनके ठेकों को विभिन्न लयकारी (दुगन, तिगुन व चौगुन) में लिपिबद्ध करने के विषय में बताया गया है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप पाठ्यक्रम की तालों के ठेकों एवं उनको विभिन्न लयकारी में लिपिबद्ध करने के विषय में जान सकेंगे। इससे आप लयकारी को बोलने एवं बजाने में भी सक्षम होंगे।

## 1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात :–

1. आपको लयकारी का ज्ञान हो सकेगा।
2. आप तबले की ताल के ठेकों को विभिन्न लयकारी में लिपिबद्ध एवं उसके क्रियात्मक स्वरूप को तबले में प्रस्तुत कर पाएंगे।
3. आप लयकारी का प्रयोग अपने वादन(एकल वादन व संगत) करने में सक्षम होंगे जिससे आप का वादन प्रभावशाली होगा।

## 1.3 तालों का परिचय

### 1.3.1 पंचमसवारी ताल का परिचय :–

**परिचय** – इस ताल को सिर्फ सवारी ताल के नाम से भी जाना जाता है। यह सवारी ताल के प्रकारों में से एक है। 'भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन' के लेखक डॉ0 अरूण कुमार सेन ने 18 प्रकार की सवारी बताई हैं – कैद सवारी, कुर्क सवारी, तृतीय सवारी, चतुर्थ सवारी, पंचम सवारी, षष्ठ सवारी, सप्तम सवारी, चंपक सवारी, शेर की सवारी, बड़ी सवारी, मर्दानी सवारी, जनानी सवारी, सीता सवारी, छोटी सवारी, बसारी सवारी और मंजरी सवारी आदि। किन्तु किसी भी ग्रन्थ में पंचमसवारी, जिसे सवारी के नाम से भी जाना जाता है को छोड़कर अन्य किसी भी सवारी के प्रकारों का विशेष उल्लेख प्राप्त नहीं होता है। विषम ताल होने के कारण इसकी गिनती कठिन तालों में की जाती है। यह तीनताल, एकताल, झपताल आदि तालों की अपेक्षा कम लोकप्रिय है। शास्त्रीय संगीत की विलम्बित की रचनाओं के साथ पंचम सवारी प्रयोग की जाती है। पंचमसवारी द्रुत व अति द्रुत लय में भी बजाई जाती है अतः इसका प्रयोग गायन में द्रुत ख्याल व वादन में द्रुत गत में किया जाता है। तबले पर एकल वादन हेतु भी इसका प्रयोग किया जाता है। इस ताल में उठान, पेशकार, कायदे, रेला, गत, परन, चक्करदार, टुक्डे, तिहाईयां आदि बजाए जाते हैं।

पंचमसवारी के ठेके के भिन्न–भिन्न प्रकार मिलते हैं। यह चार विभाग की 15 मात्रा की विषम पदीय ताल है। इसमें पहले विभाग में तीन एवं अन्य विभाग में चार–चार मात्राएं हैं।

**मात्रा – 15, विभाग – 4, ताली – 1, 4 व 12 पर, खाली – 8 पर**

**ठेका**

| धी ना धीधी | कत धीधी नाधी धीना | तीक तीना तिरकिट तूना |
|---|---|---|
| × | 2 | 0 |

| कता धीधी नाधी धीना | धि |
|---|---|
| 3 | × |

**1.3.2 झपताल का परिचय :–**

**परिचय** – यह चार विभाग में विभक्त 10 मात्रा की विषम पदीय ताल है, जिसका प्रथम व तृतीय विभाग दो–दो मात्रा का एवं दूसरा व चौथा विभाग तीन–तीन मात्रा का है। पहली, तीसरी एवं आठवीं मात्रा पर ताली एवं छठी मात्रा पर खाली है। प्रथम विभाग में चतुस्त्र का खण्ड दो मात्रा एवं द्वितीय विभाग तिस्त्र जाति का है जो मिलकर खण्ड जाति बनाता है। विभागों में समान मात्राएं ना होने के कारण यह विषम ताल है। इसका प्रयोग मध्य लय की रचनाओं के साथ किया जाता हैं। एकल वादन में भी झपताल का खूब प्रयोग किया जाता है।

**मात्रा – 10, विभाग – 4, ताली – 1, 3 व 8 पर, खाली – 6 पर**

**ठेका**

| धि ना | धि धि ना | ति ना | धि धि ना | धि |
|---|---|---|---|---|
| × | 2 | 0 | 3 | × |

**1.3.3 दीपचन्दी ताल का परिचय :–**

**परिचय** – दीपचन्दी ताल को चांचर के नाम से भी जाना जाता है। मुख्यतः इसका प्रयोग उपशास्त्रीय संगीत या सुगम संगीत में किया जाता है। इस कारण ये ताल तबले के साथ–साथ ढ़ोलक, नाल, नक्कारा आदि अवनद्य वाद्यों पर भी बजाया जाता है। दीपचन्दी ताल में अधिक वादन सम्भव ना होने के कारण इसका प्रयोग एकल वादन हेतु नहीं किया जाता है। इसका वादन तीनों लयों – विलम्बित, मध्य व द्रुत लय में किया जाता है। उपशास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत इसका मुख्य प्रयोग होली व विलम्बित लय के ठुमरी गायन की संगति के लिए किया जाता है। इस ताल में लग्गी–लड़ी का प्रयोग बहुतायत में होता है।

यह चौदह मात्रा की ताल है। 14 मात्राएं 3/4/3/4 विभाग में विभाजित हैं, अतः इसे मिश्र जाति की अर्द्ध समपदीय ताल कहते हैं। इसमें पहला एवं तीसरा विभाग तीन–तीन मात्रा एवं दूसरा एवं चौथा विभाग चार–चार मात्रा का है। पहली, चौथी एवं ग्यारहवीं मात्रा पर ताली एवं आठवीं मात्रा पर खाली है।

**मात्रा – 14, विभाग – 4, ताली – 1, 4 व 11 पर, खाली – 8 पर**

**ठेका**

| धा धिं ऽ | धा धा तिं ऽ | ता तिं ऽ | धा धा धिं ऽ | धा |
|---|---|---|---|---|
| × | 2 | 0 | 3 | × |

### 1.3.4 तीवरा ताल का परिचय :–

**परिचय** – इसे तीव्रा या तेवरा नाम से भी जाना जाता है। कुछ विद्वान इसे गीतांगी भी कहते हैं। वैसे तो यह पखावज के महत्वपूर्ण तालों में से एक है किन्तु इसे तबले पर भी बजाया जाता है। तीवरा ताल की संरचना रूपक ताल की भांति है। यह दक्षिण भारतीय संगीत की मिश्र जाति के त्रिपुट ताल के समान है। पखावज पर एकल वादन में तथा गायन में इसका प्रयोग ध्रुपद शैली की मध्य एवं द्रुत लय की रचनाओं के साथ किया जाता है। इसमें परन, टुक्ड़े, तिहाईयाँ आदि रचनाएं बजाई जाती हैं। तबले पर इसका प्रयोग ध्रुपद अंग की गायकी के साथ खुले अंग के रूप में किया जाता है। इसे विलम्बित लय में प्रयोग करने का प्रचलन नहीं है।

यह एक विषमपदीय ताल है। इसमें 7 मात्राएं होती हैं जो 3/2/2 – कुल 3 विभागों में बँटी होती हैं। पहले विभाग में तीन तथा दूसरे व तीसरे में दो–दो मात्राएं होती हैं। इसकी पहली, चौथी व छठी मात्रा पर ताली होती है। इसमें खाली नहीं होती है।

**मात्रा – 7, विभाग – 3, ताली – 1, 4 व 6 पर**

**ठेका**

| धा | दीं | ता | तिट | कत | गदि | गन | धा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | | 3 | | × |

### 1.3.5 लक्ष्मी ताल का परिचय :–

**परिचय** – यह पखावज का एक अप्रचलित ताल है। यह अठारह विभाग में विभक्त अठारह मात्रा की समपदीय ताल है। पहले इसका प्रयोग ध्रुपद की संगति के लिए किया जाता था। इस ताल के स्वरूप को लेकर काफी मतभेद हैं। कुछ विद्वान इसे 18 मात्रा का तो कुछ इसे 21 मात्रा का भी मानते हैं। इसमें पहली, दूसरी, तीसरी, पांचवीं, छठी, सातवीं, नौवीं, दसवीं, ग्यारवीं, बारहवीं, तेहरवीं, चौदहवीं, पन्द्रहवीं, सौलहवीं एवं सत्रहवीं मात्रा पर ताली एवं चौथी, आठवीं एवं अठारवीं मात्रा पर खाली है।

**मात्रा – 18, विभाग – 18, ताली – 1, 2, 3, 5, 6, 7, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16 व 17 पर, खाली – 4, 8 व 18 पर**

**ठेका**

| धिं | तेत | घेत्त | धेत्त | दिं | ता | तिट | कत | धा | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 | |
| दिं | ता | धुम | किट | धुम | तिट | कत | गदी | गिन | धिं |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |

## 1.4 तालों को लयकारियों में लिखना

**लयकारी** – समय की समान गति को लय कहते हैं। दो मात्राओं की किया के मध्य होने वाला विश्रांति काल ही लय है और जब यह काल प्रयोग होने वाली मात्राओं के बीच समान रहता है तो वह निश्चित लय का स्वरूप ले लेता है। अतः लय का सम्बन्ध मात्रा एव मात्राओं के बीच के समय से है।

लय समान्य रूप से तीन प्रकार की मानी गई है। विलम्बित, मध्य एवं द्रुत लय। काल के लम्बा होने पर विलम्बित लय स्थापित होती है। इस काल के कम होने पर मध्य लय एवं उससे अधिक कम होने पर द्रुत लय हो जाती है। सामान्य रूप से मध्य लय का विश्रांति समय विलम्बित लय के विश्रांति समय का आधा होता हैं एवं द्रुत लय का विश्रांति मध्य लय में विश्रांति समय का आधा होता है। संगीत में यह मान्यता स्थापित हो चुकी है एवं प्रचलन में है। विलम्बित लय को आधार लय मानने से मध्य लय का प्रयोग विलम्बित लय में दो बार एवं द्रुत लय का प्रयोग चार बार करने की आवश्यकता होगी अतः मध्य लय विलम्बित लय की दुगुनी, द्रुत लय मध्य लय की दुगुन होती है। लय का यही प्रयोग लयकारी कहलाता है। एक मात्रा में एक से अधिक मात्राओं का आधार लय के साथ प्रयोग लयकारी कहलाता है।

संगीत में विभिन्न लयकारी जैसे दुगुन, तिगुंन, चौगुन, आड, कुआड, एवं बिआड प्रयोग की जाती है।

**दुगुन –** एक मात्रा में दो मात्रा — 1 2 1 2

**तिगुन –** एक मात्रा में तीन मात्रा — 1 2 3 123

**चौगुन –** एक मात्रा में चार मात्रा — 1234 1234

**आड –** एम मात्रा में डेढ़ मात्रा अथवा दो मात्रा में तीन मात्रा को आड लयकारी को डयोडी लय भी लय कहा जाता हैं एवं इसको 3/2 की लयकारी के रूप में भी व्यक्त करते हैं। 1 S 2 S 3 S

**कुआड–** इस लयकारी के विषय में दो मत हैं। पहला– आड की आड को कुआड कहते हैं अतः 9/4 जिसके अनुसार चार मात्रा में नौ मात्रा अथवा एक मात्रा में $2\frac{1}{4}$ अथवा सवा दो मात्रा का प्रयोग करते हैं। दूसरा – 5/4 की लयकारी अर्थात चार मात्रा में पांच मात्रा अथवा एक मात्रा में सवा मात्रा। इस दूसरे मत का अधिक प्रचलन है एवं इसको सवागुन की लयकारी भी कहते हैं।

**पहले मत के अनुसारः–**

1S S S 2S S S 3 S S S 4 SS S 5 S S S 6 S S S 7 S S S 8 S S S 9 S S S

1 2 3 4

**दूसरे मत के अनुसारः–**

1 S S S 2 S S S 3 S S 4 S S S 5 S S S

1 2 3 4

**बिआड लय** – इस लयकारी के विषय में भी दो मत हैं। एक मत के अनुसार कुआड लय की आड, बिआड लयकारी होती जिसे $^{9}/_{4} \times {}^{3}/_{2} = \frac{27}{8}$ के रूप में व्यक्त करते हैं। दूसरे मत के अनुसार $^{7}/_{4}$की लयकारी बिआड की लयकारी है। इसमें एक मात्रा में पैने दो गुन मात्रा प्रयोग की जाती है। इसे पौने दो गुन की लयकारी भी कहते हैं।

**पहले मत के अनुसार :–**

1S S S S S S 2 S S S S S S 3 S S S S S S 4 S S

S S S S S 5 S S S S S S S 6 S S S S S S S 7 S S S S S

S S 8 S S S S S S S 9 S S S S S S S S 10 S S S S S S S 11

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ 12 ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ 13 ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ 14 ऽ ऽ ऽ

ऽ ऽ ऽ ऽ 15 ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ 16 ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ 17 ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

ऽ ऽ 18 ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ 19 ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ 20 ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ 21 ऽ

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ 22 ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ 23 ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ 24 ऽ ऽ ऽ ऽ

ऽ ऽ ऽ 25 ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ 26 ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ 27 ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

दूसरे मत के अनुसार :–

1 ऽ ऽ ऽ 2 ऽ ऽ , ऽ 3 ऽ ऽ ऽ 4 ऽ , ऽ ऽ 5 ऽ ऽ ऽ 6, ऽ ऽ ऽ 7 ऽ ऽ ऽ

कुआड एवं बिआड के सम्बन्ध में दूसरा मत ही अधिक प्रचलित एवं व्यवहारिक है, अतः लयकारी लिपिबद्ध करने में दूसरे मत का ही प्रयोग करेंगे। आड, कुआड एवं बिआड लयकारी लिखने के लिए इनकी भिन्न अथवा बटे में दिखाई संख्या से भाग देते हैं। गणित के अनुसार भाग देने में बटे की संख्या उलटी हो कर गुणा में बदल जाती है।

उदाहरण आड को बट्टा संख्या 3/2 = $1\frac{1}{2}$

आड लयकारी की मात्रा संख्या = ताल की मात्रा × 2/3, किस मात्रा से आरम्भ की जानी है, इसके लिए उपर की संख्या को ताल की मात्रा संख्या से घटाते हैं।

ताल की मात्रा संख्या – ताल की भाग संख्या × 2/3 जो लयकारी लिखनी है। उसमें बट्टा के नीचे वाली राशी में से एक घटाकर उतनी संख्या के अवग्रह लगाते हैं।

**उदाहरण–** आड की लयकारी – $^{3}/_{2}$ = 2–1= 1

कुआड की लयकारी – $^{5}/_{4}$ = $4-1=3$

बिआड की लयकारी – $^{7}/_{4}$ = $4-1=3$

अतः आड की लयकारी को मात्रा के साथ एक अवग्रह, कुआड एवं बिआड की लयकारी में तीन अवग्रह लगाते हैं। इसके पश्चात बट्टा की ऊपर वाली राशि में विभाग बना लेते हैं। सरलता के लिए पीछे से विभाग बनाना शुरू करते हैं एवं पहली मात्रा में जितनी मात्रा कम होती है, मात्रा से पहले उतने अवग्रह लगा देते हैं जो कि आप विभिन्न तालों में लयकारी के उदाहरण से समझेंगे।

## 1.4.1 पंचमसवारी ताल में लयकारी :–

**पंचमसवारी ताल**

**मात्रा – 15, विभाग – 4, ताली – 1, 4 व 12 पर, खाली – 8 पर**

**ठेका**

| धी | ना | धीधी | कत | धीधी | नाधी | धीना | तीक | तीना | तिरकिट | तूना |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | | | | 0 | | | |

| कता | धीधी | नाधी | धीना | धि |
|---|---|---|---|---|
| 3 | | | | × |

**पंचमसवारी ताल की दुगुन :–**

| धीना | धीधीकत | धीधीनाधी | धीनातीक | तीनातिरकिट | तूनाकत्ता | धीधीनाधी |
|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | | | |

| धीनाधी | नाधीधी | कत्तधीधी | नाधीधीना | तीकतीना | तिरकिटतूना | कत्ताधीधी | नाधीधीना | धी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 0 | | | | 3 | | | | × |

**पंचमसवारी ताल की दुगुन एक आवर्तन में :–**

| 1 धी | नाधीधी | कत्तधीधी | नाधीधीना | तीकतीना | तिरकिटतूना | कत्ताधीधी | नाधीधीना | धी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 0 | | | | 3 | | | | × |

**पंचमसवारी ताल की तिगुन :–**

| धीनाधीधी | कतधीधीनाधी | धीनातीक्रतीना | तिरकिटतूनाकत्ता | धीधीनाधीधीना |
|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | |

| धीनाधीधी | कत्तधीधीनाधी | धीनातीक्रतीना | तिरकिटतूनाकत्ता | धीधीनाधीधीना |
|---|---|---|---|---|
| | | 0 | | |

| धीनाधीधी | कतधीधीनाधी | धीनातीक्रतीना | तिरकिटतूनाकत्ता | धीधीनाधीधीना | धी |
|---|---|---|---|---|---|
| | 3 | | | | × |

**पंचमसवारी ताल की तिगुन एक आवर्तन में :–**

| धीनाधीधी | कतधीधीनाधी | धीनातीक्रतीना | तिरकिटतूनाकत्ता | धीधीनाधीधीना | धी |
|---|---|---|---|---|---|
| 0 | 3 | | | | × |

**पंचमसवारी ताल की चौगुन :–**

| धीनाधीधीकत | धीधीनाधीधीनातीक | तीनातिरकिटतूनाकता | धीधीनाधीधीना | नाधीधीकतधीधी |
|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | |

| नाधीधीनातीक्रतीना | तिरकिटतूनाकताधीधी | नाधीधीनाधीना | धीधीकतधीधीनाधी | धीनातीक्रतीनातिरकिट |
|---|---|---|---|---|
| | | 0 | | |

| तूनाकताधीधीनाधी | धीनाधीनाधीधी | कतधीधीनाधीधीना | तीक्रतीनातिरकिटतूना | कत्ताधीधीनाधीधीना | धी |
|---|---|---|---|---|---|
| | 3 | | | | × |

**पंचमसवारी ताल की चौगुन एक आवर्तन में :–**

| 1धीनाधीधी | कतधीधीनाधीधीना | तीक्रतीनातिरकिटतूना | कत्ताधीधीनाधीधीना | धी |
|---|---|---|---|---|
| 3 | | | | × |

**1.4.2 झपताल में लयकारी :–**

**झपताल**

**मात्रा – 10, विभाग – 4, ताली – 1, 3 व 8 पर, खाली – 6 पर**

**ठेका**

| धी | ना | धी | धी | ना | ती | ना | धी | धी | ना | धी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | 2 | | | 0 | | 3 | | | × |

**झपताल की दुगुन :–**

| धीना | धीधी | नाती | नाधी | धीना | धीना | धीधी | नाती | नाधी | धीना | धी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | 2 | | | 0 | | 3 | | | × |

**झपताल की दुगुन एक आवर्तन में :–**

| धीना | धीधी | नाती | नाधी | धीना | धी |
|---|---|---|---|---|---|
| 0 | | 3 | | | × |

**झपताल की तिगुन :–**

| धीनाधी | धीनाती | नाधीधी | नाधीना | धीधीना | तीनाधी | धीनाधी | नाधीधी | नातीना | धीधीना | धी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | 2 | | | 0 | | 3 | | | × |

**झपताल की तिगुन एक आवर्तन में :–**

| 12धी | नाधीधी | नातीना | धीधीना | धी |
|---|---|---|---|---|
| | 3 | | | × |

**झपताल की चौगुन :–**

| धीनाधीधी | नातीनाधी | धीनाधीना | धीधीनाती | नाधीधीना |
|---|---|---|---|---|
| × | | 2 | | |

| धीनाधीधी | नातीनाधी | धीनाधीना | धीधीनाती | नाधीधीना | धी |
|---|---|---|---|---|---|
| 0 | | 3 | | | × |

**झपताल की चौगुन एक आवर्तन में :–**

| 12धीना | धीधीनाती | नाधीधीना | धी |
|---|---|---|---|
| 3 | | | × |

**1**

| तीतीनाधी | नाधीनाती | तीनाधीना | धीनातीती | नाधीनाधी | नातीतीना | धीनाधीना | **ती** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **0** | | | **2** | | **3** | | **0** |

| 6 | 7 | 8 | 0 | × |
|---|---|---|---|---|

### 1.4.3 दीपचन्दी ताल में लयकारी :–

**दीपचन्दी ताल**

**मात्रा – 14, विभाग – 4, ताली – 1, 4 व 11 पर, खाली – 8 पर**

**ठेका**

| धा | धिं | ऽ | धा | धा | तिं | ऽ | ता | तिं | ऽ | धा | धा | धिं | ऽ | धा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | | | | 0 | | | 3 | | | | × |

**दीपचन्दी ताल की दुगुन :–**

| धाधिं | ऽधा | धातिं | ऽता | तिंऽ | धाधा | धिंऽ | धाधिं | ऽधा | धातिं | ऽता | तिंऽ | धाधा | धिंऽ | धा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | | | | 0 | | | 3 | | | | × |

**दीपचन्दी ताल की दुगुन एक आवर्तन में :–**

| धाधिं | ऽधा | धातिं | ऽता | तिंऽ | धाधा | धिंऽ | धा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **0** | | | **3** | | | | × |

**दीपचन्दी ताल की तिगुन :–**

| धाधिंऽ | धाधातिं | ऽतातिं | ऽधाधा | धिंऽधा | धिंऽधा | धातिंऽ | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | | | | |
| तातिंऽ | धाधाधिं | ऽधाधिं | ऽधाधा | तिंऽता | तिंऽधा | धाधिंऽ | धा |
| 0 | | | 3 | | | | × |

**दीपचन्दी ताल की तिगुन एक आवर्तन में :–**

| 1धाधिं | ऽधाधा | तिंऽता | तिंऽधा | धाधिंऽ | धा |
|---|---|---|---|---|---|
| | 3 | | | | × |

**दीपचन्दी ताल की चौगुन :–**

| धाधिंऽधा | धातिंऽता | तिंऽधाधा | धिंऽधाधिं | ऽधाधातिं | ऽतातिंऽ | धाधाधिंऽ | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | | | | |
| धाधिंऽधा | धातिंऽता | तिंऽधाधा | धिंऽधाधिं | ऽधाधातिं | ऽतातिंऽ | धाधाधिंऽ | धा |
| 0 | | | 3 | | | | × |

**दीपचन्दी ताल की चौगुन एक आवर्तन में :–**

| 12धाधिं | ऽधाधातिं | ऽतातिंऽ | धाधाधिंऽ | धा |
|---|---|---|---|---|
| 3 | | | | × |

### 1.4.4 तीवरा ताल में लयकारी :–

**तीवरा ताल**
**मात्रा – 7, विभाग – 3, ताली – 1, 4 व 6 पर**
**ठेका**

| धा | दीं | ता | तिट | कत | गदि | गन | धा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | | 3 | | × |

**तीवरा ताल की दुगुन :–**

| धादीं | तातिट | कतगदि | गनधा | दींता | तिटकत | गदिगन | धा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | | 3 | | × |

**तीवरा ताल की दुगुन एक आवर्तन में :–**

| 1धा | दींता | तिटकत | गदिगन | धा |
|---|---|---|---|---|
| 2 | | 3 | | × |

**तीवरा ताल की तिगुन :–**

| धादींता | तिटकतगदि | गनधादीं | तातिटकत | गदिगनधा | दींतातिट | कतगदिगन | धा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | | 3 | | × |

**तीवरा ताल की तिगुन एक आवर्तन में :–**

| 12धा | दींतातिट | कतगदिगन | धा |
|---|---|---|---|
| | 3 | | × |

**तीवरा ताल की चौगुन :–**

| धादींतातिट | कतगदिगनधा | दींतातिटकत | गदिगनधादीं | तातिटकतगदि | गनधादींता | तिटकतगदिगन | धा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | | 3 | | × |

**तीवरा ताल की चौगुन एक आवर्तन में :–**

| 1धादींता | तिटकतगदिगन | धा |
|---|---|---|
| 3 | | × |

### 1.4.5 लक्ष्मी ताल में लयकारी :–

**लक्ष्मी ताल**
**मात्रा – 18, विभाग – 18, ताली – 1, 2, 3, 5, 6, 7, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16 व 17 पर,**
**खाली – 4, 8 व 18 पर**
**ठेका**

| धिं | तेत | धेत्त | धेत्त | दिं | ता | तिट | कत | धा | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 | |
| दिं | ता | धुम | किट | धुम | तिट | कत | गदि | गन | धिं |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |

**लक्ष्मी ताल की दुगुन :–**

| धिंतेत | धेत्तधेत्त | दिंता | तिटकत | धादिं | ताधुम | किटधुम | तिटकत | गदिगन | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 | |
| धिंतेत | धेत्तधेत्त | दिंता | तिटकत | धादिं | ताधुम | किटधुम | तिटकत | गदिगन | धिं |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |

**लक्ष्मी ताल की दुगुन एक आवर्तन में :–**

| धिंतेत | धेत्तधेत्त | दिंता | तिटकत | धादिं | ताधुम | किटधुम | तिटकत | गदिगन | धिं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |

**लक्ष्मी ताल की तिगुन :–**

| धिंतेतधेत्त | धेत्तदिंता | तिटकतधा | दिंताधुम | किटधुमतिट | कतगदिगन | धिंतेतधेत्त | धेत्तदिंता | तिटकतधा | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 | |
| दिंताधुम | किटधुमतिट | कतगदिगन | धिंतेतधेत्त | धेत्तदिंता | तिटकतधा | दिंताधुम | किटधुमतिट | कतगदिगन | धिं |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |

**लक्ष्मी ताल की तिगुन एक आवर्तन में :–**

| धिंतेतधेत | धेतदिंता | तिटकतधा | दिंताधुम | किटधुमतिट | कतगदगिन | धिं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |

**लक्ष्मी ताल की चौगुन :–**

| धिंतेतधेत्तधेत्त | दिंतातिटकत | धादिंताधुम | किटधुमतिटकत | गदिगनधिंतेत | धेत्तधेत्तदिंता | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| × | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | |
| तिटकतधादिं | ताधुमकिटधुम | तिटकतगदिगन | धिंतेतधेत्तधेत्त | दिंतातिटकत | धादिंताधुम | |
| 6 | 0 | 7 | 8 | 9 | 10 | |
| किटधुमतिटकत | गदिगनधिंतेत | धेत्तधेत्तदिंता | तिटकतधादिं | ताधुमकिटधुम | तिटकतगदिगन | धिं |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |

**लक्ष्मी ताल की चौगुन एक आवर्तन में :–**

| 12धिंतेत | धेतधेतदिंता | तिटकतधादिं | ताधुमकिटधुम | किटतकगदगिन | धिं |
|---|---|---|---|---|---|
| | 12 | 14 | 15 | 0 | × |

**अभ्यास प्रश्न**

क. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :–

1. डॉ0 अरूण कुमार सेन ने ..... प्रकार की सवारी बताई हैं।
2. पंचमसवारी में ..... मात्राओं पर ताली है।
3. दीपचन्दी ताल को ..... नाम से भी जाना जाता है।

4. दीपचन्दी ताल में ..... मात्रा पर खाली होती है ।
5. तीवरा ताल दक्षिण भारतीय संगीत की ..... ताल के समान है।
6. तीवरा ताल में ..... का विभाग नहीं होता है।
7. झपताल में खाली ..... मात्रा पर है।
8. लक्ष्मी ताल में ..... विभाग होते हैं।

## 1.5 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप पाठ्यक्रम की तालों को ठेकों एवं उनको विभिन्न लयकारी (दुगन, तिगुन व चौगुन) में लिपिबद्ध करने के विषय में जान चुके होंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप लयकारी को भली–भांति समझ चुके होंगे। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप लयकारी का प्रयोग अपने वादन(एकल वादन व संगत) में करने में सक्षम होगे जिससे आपका वादन प्रभावशाली होगा। इससे आप लयकारी को बोलने एवं बजाने में भी सक्षम होंगे। तबले की तालों के ठेकों को विभिन्न लयकारी में लिपिबद्ध करने एवं उसके क्रियात्मक स्वरूप को तबले में प्रस्तुत कर पायेंगे।

## 1.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

क. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :–

| | | |
|---|---|---|
| 1. 18 | 2. 1, 4 व 12 पर | 3. चंचर |
| 4. 8 पर | 5. तबले | 6. मिश्र जाति |
| 7. सूलफाक अथवा सूलफाक्ता | 8. पखावज | 9. मिश्र जाति के त्रिपुट ताल |
| 10. खाली | 11. 4(रूद्र ताल, अष्टमंगल ताल, कुंभ ताल एवं मणि ताल) | |
| 12. तबले पर | 13. 6 | 14. खाली |
| 15. 18 | 16. खाली | 17. टप्पा गायकी |

## 1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वसन्त, *संगीत विशारद*, संगीत कार्यालय, हाथरस।
2. मिश्र, पं0 विजयशंकर, तबला पुराण, कनिष्क पब्लिशर्स, दिल्ली।
3. श्रीवास्तव, श्री गिरीश चन्द्र, *ताल परिचय,* संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद।

## 1.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1. पाठ्यक्रम की किन्हीं चार तालों का पूर्ण परिचय देते हुए उनके ठेकों को दुगुन, तिगुन व चौगुन सहित लिपिबद्ध कीजिए।

# इकाई 5 – पाठ्यक्रम की तालों के ठेकों को आड, कुआड, बिआड, 3/4, 4/3 व 4/5 की लयकारी सहित लिपिबद्ध करना

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 तालों को लयकारियों में लिखना
  2.3.1 पंचमसवारी ताल में लयकारी
  2.3.2 झपताल में लयकारी
  2.3.3 दीपचन्दी ताल में लयकारी
  2.3.4 तीवरा ताल में लयकारी
  2.3.5 लक्ष्मी ताल में लयकारी
2.4 सारांश
2.5 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
2.6 निबन्धात्मक प्रश्न

## 2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई प्रदर्शन कला–संगीत में स्नातकोत्तर, तृतीय सेमेस्टर (एम0पी0ए0एम0टी0–602) पाठ्यक्रम की पॉचवी इकाई है। इससे पहले की इकाईयों के अध्ययन के बाद आप विद्वान संगीतज्ञों के महत्वपूर्ण योगदान तथा उनकी संगीत साधना के प्रति लगन एवं परिश्रम को जान चुके होंगे। आप भारतीय संगीत के ग्रन्थों का ज्ञान भी प्राप्त कर चुके होंगे। आप पाठ्यक्रम की तालों से भी परिचित हो चुके होंगे।

इस इकाई में पाठ्यक्रम की तालों के ठेकों को विभिन्न लयकारी (आड, कुआड, बिआड, 3/4, 4/3 व 4/5) में लिपिबद्ध करने के विषय में बताया गया है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप पाठ्यक्रम की तालों के ठेकों एवं उनको विभिन्न लयकारी में लिपिबद्ध करने के विषय में जान सकेंगे। इससे आप लयकारी को बोलने एवं बजाने में भी सक्षम होंगे।

## 2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात :–

1. आपको लयकारी का ज्ञान हो सकेगा।
2. आप तबले की ताल के ठेकों को विभिन्न लयकारी में लिपिबद्ध करने एवं उसके क्रियात्मक स्वरूप को तबले में प्रस्तुत कर पाएंगे।
3. आप लयकारी का प्रयोग अपने वादन(एकल वादन व संगत) करने में सक्षम होंगे जिससे आपका

वादन प्रभावशाली होगा।

## 2.3 तालों को लयकारियों में लिखना

### 2.3.1 पंचमसवारी ताल में लयकारी :–

**पंचमसवारी ताल**

**मात्रा – 15, विभाग – 4, ताली – 1, 4 व 12 पर, खाली – 8 पर**

**ठेका**

| धी | ना | धीधी | कत | धीधी | नाधी | धीना | तीक | तीना | तिरकिट | तूना |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | | | | 0 | | | |

| कता | धीधी | नाधी | धीना | धी |
|---|---|---|---|---|
| 3 | | | | × |

**पंचमसवारी ताल की आड़ :–**

| धीऽना | ऽधीधी | कतधी | धीनाधी | धीनाती |
|---|---|---|---|---|
| | | 0 | | |

| क्रतीना | तिरकिटतू | नाकता | धीधीना | धीधीना | धी |
|---|---|---|---|---|---|
| | 3 | | | | × |

**पंचमसवारी ताल की कुआड़ :–**

| धीऽऽऽना | ऽऽऽधीऽ | धीऽकऽत | ऽधीऽधीऽ | नाऽधीऽधी |
|---|---|---|---|---|
| 2 | | | | 0 |

| ऽनाऽतीऽ | क्रऽतीऽना | ऽतिरकिट | तूऽनाऽक | ऽताऽधीऽ |
|---|---|---|---|---|
| | | | 3 | |

| धीऽनाऽधी | ऽधीऽना | धी |
|---|---|---|
| | | × |

**पंचमसवारी ताल की बिआड़ :–**

| 123धीऽऽऽ | नाऽऽऽधीऽधी | ऽकऽतऽधीऽ | धीऽनाऽधीऽधी |
|---|---|---|---|
| | 0 | | |

| ऽनाऽतीऽक्रऽ | तीऽनाऽतिरकि | टतूऽनाऽकऽ | ताऽधीऽधीऽना | ऽधीऽधीऽनाऽ | धी |
|---|---|---|---|---|---|
| | 3 | | | | × |

**पंचमसवारी ताल की $\frac{3}{4}$ लयकारी :–**

धीऽऽ | ऽनाऽ | ऽऽधी | ऽधीऽ | कऽत |
3

ऽधीऽ | धीऽना | ऽधीऽ | धीऽना | ऽतीऽ |
×  2

क्रऽती | ऽनाऽ | तिरकि | टतूऽ | नाऽक |
0

ऽताऽ | धीऽधी | ऽनाऽ | धीऽधी | ऽनाऽ | धी |
3  ×

**पंचमसवारी ताल की $\frac{4}{3}$ लयकारी :–**

12धीऽ ऽनाऽऽ धीऽधीक ऽतधीऽ | धीनाऽधी धीऽनाती
0

ऽक्रतीऽ नातिरकि | टतूऽना कऽताधी ऽधीनाऽ
3

धीधीऽना | धी
×

**पंचमसवारी ताल की $\frac{4}{5}$ लयकारी :–**

| 1धीऽऽ ऽऽनाऽ ऽऽऽधी ऽधीऽऽ | कऽतऽ ऽधीऽधी ऽऽनाऽ | धीऽऽधी ऽनाऽऽ तीऽक्रऽ
3 ×  2

ऽतीऽना | ऽऽतिर किटऽतू ऽनाऽऽ कऽत्ताऽ | ऽधीऽधी ऽऽनाऽ धीऽऽधी ऽनाऽऽ | धी |
0  3  ×

**2.3.2 झपताल में लयकारी :–**

**झपताल**

**मात्रा – 10, विभाग – 4, ताली – 1, 3 व 8 पर, खाली – 6 पर**

**ठेका**

| धी ना | धी धी ना | ती ना | धी धी ना | धी |
×  2  0  3  ×

**झपताल की आड़ :–**

| 1धीऽ नाऽधी | ऽधीऽ | नाऽती | ऽनाऽ | धीऽधी | ऽनाऽ | धी |
0  3  ×

**झपताल की कुआड़ :–**

| धीऽऽऽना ऽऽऽधीऽ ऽऽधीऽऽ |
2

| ऽनाऽऽऽ तीऽऽऽना | ऽऽऽधीऽ ऽऽधीऽऽ ऽनाऽऽऽ | धी |
0  3  ×

**झपताल की बिआड़ :–**

12धीऽऽऽना | ऽऽऽधीऽऽऽ धीऽऽऽनाऽऽ | ऽतीऽऽऽनाऽ ऽऽधीऽऽऽधी ऽऽऽनाऽऽऽ | धी
0 3 ×

**झपताल की $\frac{3}{4}$ लयकारी :–**

12धी | ऽऽऽ नाऽऽ ऽधीऽ | ऽऽधी ऽऽऽ | नाऽऽ
3 × 2

ऽतीऽ ऽऽना | ऽऽऽ धीऽऽ | ऽधीऽ ऽऽना ऽऽऽ | धी
0 3 ×

**झपताल की $\frac{4}{3}$ लयकारी :–**

12धीऽ | ऽनाऽऽ धीऽऽधी ऽऽनाऽ | ऽतीऽऽ नाऽऽधी | ऽऽधीऽ ऽनाऽऽ | धी
3 × 2 ×

**झपताल की $\frac{4}{5}$ लयकारी :–**

12धीऽ ऽऽऽना ऽऽऽऽ | धीऽऽऽ ऽधीऽऽ | ऽऽनाऽ ऽऽऽती
× 2

ऽऽऽऽ | नाऽऽऽ ऽधीऽऽ | ऽऽधीऽ ऽऽऽना ऽऽऽऽ | धी
0 3 ×

**2.3.3 दीपचन्दी ताल में लयकारी :–**

**दीपचन्दी ताल**

**मात्रा – 14, विभाग – 4, ताली – 1, 4 व 11 पर, खाली – 8 पर**

**ठेका**

| धा धिं ऽ | धा धा तिं ऽ | ता तिं ऽ | धा धा धिं ऽ | धा
× 2 0 3 ×

**दीपचन्दी ताल की आड़ :–**

12धा ऽधिंऽ ऽऽधा | ऽधाऽ तिंऽऽ ऽताऽ | तिंऽऽ ऽधाऽ धाऽधिं ऽऽऽ | धा
0 3 ×

**दीपचन्दी ताल की कुआड़ :–**

धा | ऽऽऽधिंऽ ऽऽऽऽ ऽधाऽऽऽ धाऽऽऽतिं | ऽऽऽऽ ऽऽताऽऽ ऽतिंऽऽऽ |
2 0

ऽऽऽऽधा ऽऽऽधाऽ ऽऽधिंऽऽ ऽऽऽऽ | धा
3 ×

**दीपचन्दी ताल की बिआड़ :–**

धाऽऽऽधिंऽऽ | ऽऽऽऽधाऽ ऽऽधाऽऽऽतिं ऽऽऽऽऽऽ |
0

| ताऽऽऽतिंऽऽ ऽऽऽऽधाऽ ऽऽधाऽऽऽधिं ऽऽऽऽऽऽऽ | धा
3 ×

**दीपचन्दी ताल की $\frac{3}{4}$ लयकारी :–**

1धाऽ | ऽऽधिं ऽऽऽ ऽऽऽ ऽधाऽ | ऽऽधा ऽऽऽ तिंऽऽ |
3 ×

| ऽऽऽ ऽऽता ऽऽऽ तिंऽऽ | ऽऽऽ ऽऽधा ऽऽऽ |
2 0

| धाऽऽ ऽधिंऽ ऽऽऽ ऽऽऽ | धा
3 ×

**दीपचन्दी ताल की $\frac{4}{3}$ लयकारी :–**

12धाऽ | ऽधिंऽऽ ऽऽऽधा ऽऽधाऽ ऽतिंऽऽ | ऽऽऽता ऽऽतिंऽ ऽतिं | ऽऽऽऽ धाऽऽधा
2 0 3

ऽऽधिंऽ ऽऽऽऽ | धा
2 ×

**दीपचन्दी ताल की $\frac{4}{5}$ लयकारी :–**

| 12धाऽ ऽऽऽधिं ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ | ऽधाऽऽ ऽऽधाऽ ऽऽऽतिं | ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ
3 × 2

ऽताऽऽ ऽऽतिंऽ | ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ धाऽऽऽ | ऽधाऽऽ ऽऽधिंऽ ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ | धा
0 3 ×

**2.3.4 तीवरा ताल में लयकारी :–**

**तीवरा ताल**
**मात्रा – 7, विभाग – 3, ताली – 1, 4 व 6 पर**
**ठेका**

| धा | दिं | ता | तिट | कता | गदि | गन | धा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | | 3 | | × |

**तीवरा ताल की आड :–**

| 1धाऽ | दिंऽता ऽतिट | कताग दिगन | धा |
|---|---|---|---|
| | 2 | 3 | × |

**तीवरा ताल की कुआड :–**

| 12धाऽऽ ऽदिंऽऽऽ | ताऽऽऽति ऽटऽकऽ | ताऽगऽदि ऽगऽनऽ | धा |
|---|---|---|---|
| | 2 | 3 | × |

**तीवरा ताल की बिआड :–**

| धाऽऽऽदिंऽऽ ऽताऽऽऽतिऽ | टऽकऽताऽग ऽदिऽगऽनऽ | धा |
|---|---|---|
| 2 | 3 | × |

**तीवरा ताल की $\frac{3}{4}$ लयकारी :–**

| 12धा | ऽऽऽ दिंऽऽ | ऽताऽ ऽऽति ऽटऽ | कऽता ऽगऽ | दिऽग ऽनऽ | धा |
|---|---|---|---|---|---|
| | 3 | × | 2 | 3 | × |

**तीवरा ताल की $\frac{4}{3}$ लयकारी :–**

| 123धा ऽऽदिंऽ | ऽताऽऽ तिऽटक | ऽतागऽ दिगऽन | धा |
|---|---|---|---|
| | 2 | 3 | × |

**तीवरा ताल की $\frac{4}{5}$ लयकारी :–**

| 1धाऽऽ ऽऽदिंऽ | ऽऽऽता ऽऽऽऽ तिऽटऽ | ऽकऽता ऽऽगऽ | दिऽऽग ऽनऽऽ | धा |
|---|---|---|---|---|
| 3 | × | 2 | 3 | × |

**2.3.5 लक्ष्मी ताल में लयकारी :–**

**लक्ष्मी ताल**

**मात्रा – 18, विभाग – 18, ताली – 1, 2, 3, 5, 6, 7, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16 व 17 पर, खाली – 4, 8 व 18 पर**

**ठेका**

| धिं | तेत | धेत्त | धेत्त | दिं | ता | तिट | कत | धा | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 | |
| दिं | ता | धुम | किट | धुम | तिट | कत | गदि | गन | धिं |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |

**लक्ष्मी ताल की आड़ :–**

| धिंऽते | तधेत | धेतदिं | ऽताऽ | तिटक | तधाऽ | दिंऽता | ऽधुम | किटधु | मकिट | कतग | दगिन | धिं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | 0 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |

**लक्ष्मी ताल की कुआड़ :–**

| 123धिंऽ | ऽऽतेऽत | ऽधेऽतऽ | धेऽतऽदिं | ऽऽऽताऽ | ऽऽतिऽट | ऽकऽतऽ | धाऽऽऽदिं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 | 8 | 9 |
| ऽऽऽताऽ | ऽऽधुऽम | ऽकिऽटऽ | धुऽमऽकि | ऽटऽकऽ | तऽगऽदि | ऽगऽनऽ | धिं |
| 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |

**लक्ष्मी ताल की बिआड़ :–**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 12345धिंऽ | ऽऽतेऽतऽधे | ऽतऽधेऽतऽ | दिंऽऽऽताऽऽ | ऽतिऽटऽकऽ | तऽधाऽऽऽदिं | ऽऽऽताऽऽऽ | धुऽमऽकिऽट |
| | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| ऽधुऽमऽकिऽ | | | टऽकऽतऽग | | ऽदिऽगऽनऽ | | धिं |
| 14 | | | 15 | | 0 | | × |

**लक्ष्मी ताल की $\frac{3}{4}$ लयकारी :–**

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| धिऽऽ | ऽतेऽ | तऽधे | ऽतऽ | धेऽत | ऽदिंऽ | |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | |
| ऽऽत | ऽऽऽ | तिऽट | ऽकऽ | तऽधा | ऽऽऽ | |
| × | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | |
| दिंऽऽ | ऽताऽ | ऽऽधु | ऽमऽ | किऽट | ऽधुऽ | |
| 6 | 0 | 7 | 8 | 9 | 10 | |
| मऽकि | ऽटऽ | कऽत | ऽगऽ | दिऽग | ऽनऽ | धिं |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |

**लक्ष्मी ताल की $\frac{4}{3}$ लयकारी :–**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 12धिऽ | ऽतेऽत | धेऽतधे | ऽतदिंऽ | ऽताऽऽ | |
| | 5 | 6 | 0 | 7 | |
| तिऽटक | ऽतधाऽ | ऽदिंऽऽ | ताऽऽधु | ऽमकिऽ | टधुऽम |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| किऽटक | ऽतगऽ | दगिऽन | धिं | | |
| 14 | 15 | 0 | × | | |

**लक्ष्मी ताल की $\frac{4}{5}$ लयकारी :–**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 12धिंऽ | ऽऽऽते | ऽतऽऽ | धेऽतऽ | ऽधेऽत | ऽऽदिंऽ |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |
| ऽऽऽता | ऽऽऽऽ | तिऽटऽ | ऽकऽत | ऽऽधाऽ | ऽऽऽदिं |
| 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 |
| ऽऽऽऽ | ताऽऽऽ | ऽधुऽम | ऽऽकिऽ | टऽऽधु | ऽमऽऽ |
| 0 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| तिऽटऽ | ऽकऽत | ऽऽगऽ | दिऽऽग | ऽनऽऽ | धिं |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |

**अभ्यास प्रश्न**

क. लघु उत्तरीय प्रश्न :–

1. पंचमसवारी ताल की आड, कुआड व बिआड लिखिए।

2. झपताल की कुआड व रूपक की बिआड लिपिबद्ध कीजिए।
3. दीपचन्दी व तीवरा ताल की $\frac{3}{4}$ लयकारी लिखिए ।

## 2.4 सारांश

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप पाठ्यक्रम की तालों के ठेकों एवं उनको विभिन्न लयकारी (आड, कुआड, बिआड, 3/4, 4/3 व 4/5) में लिपिबद्ध करने के विषय में जान चुके होंगे। इस इकाई के अध्ययन से आप लयकारी को भली–भांति समझ चुके होंगे। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप लयकारी का प्रयोग अपने वादन(एकल वादन व संगत) में करने में सक्षम होंगे जिससे आपका वादन प्रभावशाली होगा। इससे आप लयकारी को बोलने एवं बजाने में भी सक्षम होंगे। तबले की तालों के ठेकों को विभिन्न लयकारी में लिपिबद्ध करने एवं उसके क्रियात्मक स्वरूप को तबले में प्रस्तुत कर पाएंगे।

## 2.5 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वसन्त, *संगीत विशारद*, संगीत कार्यालय, हाथरस।
2. मिश्र, पं0 विजयशंकर, तबला पुराण, कनिष्क पब्लिशर्स, दिल्ली।
3. श्रीवास्तव, श्री गिरीश चन्द्र, *ताल परिचय,* संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद।

## 2.6 निबन्धात्मक प्रश्न

1. पाठ्यक्रम की किन्हीं चार तालों के ठेकों को आड, कुआड, बिआड, 3/4, 4/3 व 4/5 की लयकारी सहित लिपिबद्ध कीजिए।

# इकाई 6 – तबले की रचनाओं (पाठ्यक्रमानुसार) को लिपिबद्ध करना

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 पाठ्यक्रम की तालों में तबले की रचनाएं
  3.3.1 झपताल में रचनाएं
  3.3.2 पंचमसवारी ताल में रचनाएं
  3.3.3 दीपचन्दी ताल में रचनाएं
  3.3.4 तीवरा ताल में रचनाएं
  3.3.5 लक्ष्मी ताल में रचनाएं
3.4 सारांश
3.5 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री
3.6 निबन्धात्मक प्रश्न

## 3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई प्रदर्शन कला–संगीत में स्नातकोत्तर, तृतीय सेमेस्टर (एम0पी0ए0एम0टी0–602) पाठ्यक्रम की छठी इकाई है। पूर्व की इकाईयों में आपने पाठ्यक्रम की तालों का पूर्ण परिचय एवं उनको विभिन्न लयकारियों जैसे दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़, कुआड, बिआड़, 3/4, 4/3 एवं 4/5 में लिखना एवं प्रयोग करना जान गए हैं।

इस इकाई में आप तबला वादन में प्रयोग होने वाली रचनाओं का अध्ययन करेंगे जो कि भातखण्डे तालिपि में लिपिबद्ध कर प्रस्तुत की गई है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप तबले की रचनाओं को लिपिबद्ध कर भविष्य के सन्दर्भ के लिए सुरक्षित कर पाएंगे एवं इनको तबले पर क्रियात्मक रूप में भलि–भांति प्रस्तुत कर पाएंगे।

## 3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप :–

1. तबले की रचनाओं को लिपिबद्ध कर पाएंगे।
2. तबले की रचनाओं की लिपि को समझकर क्रियात्मक रूप में प्रस्तुत कर पाएंगे।
3. यह भी जानेंगे की एक ही रचना को मात्राओं के अनुसार किन–किन तालों में प्रयोग किया जा सकता हैं।

## 3.3 पाठ्यक्रम की तालों में तबले की रचनाएं

### 3.3.1 झपताल में रचनाएं :–

पाठ्यक्रम के अनुसार झपताल विस्तृत अध्ययन की ताल है एवं प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम में मंच प्रदर्शन के लिए रखी गई है। इसमें उठान, पेशकार, दो कायदे, रेला, टुक्ड़ा, परन, चक्करदार(सादा), चक्करदार (फरमाइशी) एवं गत लिपिबद्ध कर प्रस्तुत की जा रही है।

**उठान**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धागेतिना | किडनकतातिर | किटतकतिरकिट | तकतिरकिटतक | तिरकिटधाती | |
| × | | 2 | | | |
| धाधा | धाऽधाती | धाधा | धाऽधाती | धाधा | धी |
| 0 | | 3 | | | × |

**पेशकार (मुख्य बोल)**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धिंऽधिता | ऽधाधिंता | ऽधाधिंता | धातीधाती | धाधातिंता | |
| × | | 2 | | | |
| तिंऽतिंता | ऽतातिंता | ऽधाधिंता | धातीधाती | धाधाधिंता | |
| 0 | | 3 | | | |

**पल्टा – 1**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ऽधाधिंता | ऽधाधिंता | ऽधाधिंता | धातीधाती | धातिता | |
| × | | 2 | | | |
| ऽतातिंता | ऽतातिंता | ऽधाधिंता | धातीधाती | धाधाधिंता | |
| 0 | | 3 | | | |

**पल्टा– 2**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धिंताऽधा | ऽधाधिंता | ऽधाधिंता | धातीधाती | धाधातिंता | |
| × | | 2 | | | |
| तिंताऽता | ऽतातिंता | ऽधाधिंता | धातीधाती | धाधातिंता | |
| 0 | | 3 | | | |

**पल्टा– 3**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धिंताधाती | धाधाधिंता | ऽधाधिंता | धातीधाती | धाधातिंता | |
| × | | 2 | | | |
| तिंताताती | तातातिंता | ऽधाधिंता | धातीधाती | धाधाधिंता | |
| 0 | | 3 | | | |

**तिहाई**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धातीधाती | धाधाधिंता | धाऽधाऽ | धाऽधाती | धातीधाधा | |
| × | | 2 | | | |
| धिंताधाऽ | धाऽधाऽ | धातीधाती | धाधाधिंता | धाऽधाऽ | धी |
| 0 | | 3 | | | × |

**कायदा 1 – चतुरश्र जाति**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धागेतिट | धिनधागे | नधातिट | धिनधागे | तिनाकिन |
| × | | 2 | | |
| ताकेतिट | किनताके | नधातिट | धिनधागे | धिनागिन |
| 0 | | 3 | | |

**कायदे की दुगुन**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धागेतिटधिनधागे | नधातिटधिनधागे | तिनाकिनताकेतिट | किनताकेनधातिट | धिनधागेधिनागिन |
| × | | 2 | | |
| धागेतिटधिनधागे | नधातिटधिनधागे | तिनाकिनताकेतिट | किनताकेनधातिट | धिनधागेधिनागिन |
| 0 | | 3 | | |

**पल्टा – 1**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धागेनधातिटधिन | धागेतिटधिनधागे | नाधातिटधिनधागे | तिटधिननधातिट | धिनधागेतिनाकिन |
| × | | 2 | | |
| ताकेनतातिटकिन | ताकेतिटकिनताके | नधतिटधिनधागे | तिटधिननधातिट | धिनधागेधिनागिन |
| 0 | | 3 | | |

**पल्टा – 2**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नधातिटधिननधा | तिटधिनधागेनधा | तिटधिनधागेतिट | धिनधागेनधातिट | धिनधागेतिनाकिन |
| × | | 2 | | |
| ततातिटकिननता | तिटकिनताकेनता | तिनधिनधागेतिट | धिनधागेनधातिट | धिनधागेधिनागिन |
| 0 | | 3 | | |

**पल्टा – 3**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तिटधिननधातिट | धिननधातिटधिन | तिटधिनधागेतिट | धिनधागेनधातिट | धिनधागेतिनाकिन |
| × | | 2 | | |
| तिटकिननतातिट | किननतातिटकिन | तिटधिनधागेतिट | धिनधागेनधातिट | धिनधागेतिनाकिन |
| 0 | | 3 | | |

**तिहाई**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धिनधागेधिनागिन | धिनधागेधिनागिन | धाऽधाऽ | धाऽधिनधागे | धिनागिनधिनधागे | |
| × | | 2 | | | |
| धिनागिनधाऽधाऽ | धाऽधिनधागे | धिनगिनाधिनधागे | धिनागिनधाऽ | धाऽधाऽ | धी |
| 0 | | 3 | | | × |

**कायदा 2 – तिस्त्र जाति**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धिऽन | धगेन | धाऽऽ | धगेन | धातिरकिट |
| × | | 2 | | |
| धागेन | धातिरकिट | धितिट | धिनति | नाकिन |
| 0 | | 3 | | |
| तिऽन | तकेन | ताऽऽ | तकेन | धातिरकिट |
| × | | 2 | | |
| धागेन | धातिरकिट | धितिट | धिनाधि | नागिन |
| 0 | | 3 | | |

**कायदे की दुगुन**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धिऽनधगेन | धाऽऽधगेन | धातिरकिटधगेन | धातिरकिटधितिट | धिनातिनाकिन |
| × | | 2 | | |
| तिऽनतकेन | ताऽऽतकेन | धातिरकिटधगेन | धातिरकिटधितिट | धिनाधेनागिन |
| 0 | | 3 | | |

**पल्टा – 1**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धागेनधिऽन | धगेनधाऽऽ | धातिरकिटधगेन | धातिरकिटधितिट | धिनातिनाकिन |
| × | | 2 | | |
| तकेनतिऽन | तकेनताऽऽ | धातिरकिटधगेन | धातिरकिटधितिट | धिनधिनागिन |
| 0 | | 3 | | |

**पल्टा – 2**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धातिरकिटधगेन | धाऽऽधगेन | धिऽनधगेन | धातिरकिटधितिट | धिनातिनाकिन |
| × | | 2 | | |
| तातिरकिटतकेन | ताऽऽतकेन | धिऽनधगेन | धातिरकिटधितिट | धिनाधिनागिन |
| 0 | | 3 | | |

**पल्टा – 3**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धातिरकिटधगेन | धातिरकिटधितिट | धातिटकिटधगेन | धातिरकिटधितिट | धिनातिनाकेन |
| × | | 2 | | |
| तातिरकिटतकेन | तातिरकिटतितिट | धातिरकिटधगेन | धातिरकिटधितिट | धिनाधिनागिन |
| 0 | | 3 | | |

**तिहाई**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धातिरकिटधितिट | धिनतिनाकिन | धा | ऽ | धातिरकिटधितिट | |
| × | | 2 | | | |
| धिनतिनाकिन | धा | ऽ | धातिरकिटधितिट | धिनतिनाकिन | धी |
| 0 | | 3 | | | × |

**रेला – (मुख्य बोल)**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धाऽधातिर | किटतकतिरकिट | धातिरकिटतक | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक |
| × | | 2 | | |
| ताऽतातिर | किटतकतिरकिट | धातिरकिटतक | धातिरकिटतक | धातिरकिटतक |
| 0 | | 3 | | |

**पल्टा – 1**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धातिरकिटतक | तिरकिटधाऽ | धातिरकिटतक | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक |
| × | | 2 | | |
| तातिरकिटतक | तिरकिटताऽ | धातिरकिटतक | धातिरकिटतक | धातिरकिटतक |
| 0 | | 3 | | |

**पल्टा – 2**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तिरकिटधाऽ | धातिरकिटतक | तिरकिटधातिर | किटतकतिरकिट | तातिरकिटतक |
| × | | 2 | | |
| तिरकिटताऽ | तातिरकिटतक | तिरकिटधातिर | किटतकतिरकिट | धतिरकिटतक |
| 0 | | 3 | | |

**पल्टा – 3**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धातिरकिटतक | तिरकिटधातिर | किटतकतिरकिट | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक |
| × | | 2 | | |
| तातिरकिटतक | तिरकिटतातिर | किटतकतिरकिट | धातिरकिटतक | धातिरकिटतक |
| 0 | | 3 | | |

**तिहाई**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धातिरकिटतक | तिरकिटधातिर | किटतकतिरकिट | धाऽधातिर | किटतकतिरकिट | |
| × | | 2 | | | |
| धातिरकिटतक | तिरकिटधाऽ | धातिरकिटतक | तिरकिटधातिर | किटतकतिरकिट | धी |
| 0 | | 3 | | | × |

**परन**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धिटधिट | धागेतिट | कऽधातिट | धागेतिट | कऽधातिट | |
| × | | 2 | | | |
| कऽधातिट | कऽधातिट | धागेतिट | गदीगिन | नागेतिट | |
| 0 | | 3 | | | |
| धागेतिट | ताकेतिट | कतिटत | किनताके | तिटकता | |
| × | | 2 | | | |
| गदिगिन | धागेतिट | धागेतिट | ताकेतिट | ताकेतिट | |
| 0 | | 3 | | | |
| धित्ततगे | ऽनधित्त | तगेऽन | धित्ताऽ | तिरकिटधित्त | |
| × | | 2 | | | |
| तगेऽन | धा | धित्ततगे | ऽनधित्त | तगेऽन | |
| 0 | | 3 | | | |
| धित्ताऽ | तिरकिटधित्त | तगेऽन | धा | धित्ततगे | |
| × | | 2 | | | |
| ऽनधित्त | तगेऽन | धित्ताऽ | तिरकिटधित्त | तगेऽन | धी |
| 0 | | 3 | | | × |

**टुकड़ा**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| घेतिरकिटतक | ता | घेतिरकिटतक | ताऽकता | गऽदींऽ | |
| × | | 2 | | | |
| कतधाऽ | घेतिरकिटतक | ताऽकता | धाऽकता | धाऽकता | |
| 0 | | 3 | | | |
| धा | घेतिरकिटतक | ताऽकता | धाऽकता | धाऽकता | |
| × | | 2 | | | |
| धा | घेतिरकिटतक | ताऽकता | धाऽकता | धाऽकता | धी |
| 0 | | 3 | | | × |

**चक्करदार टुकड़ा (सादा)**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कऽतिट | घेघेतिट | कऽधातिट | धागेतिट | कऽधातिट | |
| × | | 2 | | | |
| कऽताऽ | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताक्ड़ान | धाऽघेतिट | |
| 0 | | 3 | | | |
| किटतकतातिर | किटतकता | कड़ानधा | घेतिरकिटतक | तातिरकिटतक | |
| × | | 2 | | | |
| ताकड़ान | धा | कऽतिट | घेघेतिट | कऽधातिट | |
| 0 | | 3 | | | |
| धागेतिट | कऽधातिट | कऽताऽ | घेतिरकिटतक | तातिरकिटतक | |
| × | | 2 | | | |
| ताक्ड़ान | धाऽघेतिट | किटतकतातिर | किटतकता | कड़ानधा | |
| 0 | | 3 | | | |
| घेतिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताकड़ान | धा | कऽतिट | |
| × | | 2 | | | |
| घेघेतिट | कऽधातिट | धागेतिट | कऽधातिट | कऽताऽ | |
| 0 | | 3 | | | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| घेतिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताकड़ान | धाऽघेतिर | किटतकतातिर | |
| × | | 2 | | | |
| किटतकता | कड़ानधा | घेतिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताकड़ान | धी |
| 0 | | 3 | | | × |

**चक्करदार (फरमाइशी)**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धिरधिरकिटतक | तकिटधा | धिरधिरकिटतक | तकिटधा | धिरधिरकिटतक | |
| × | | 2 | | | |
| तकिटधा | धिरधिरकिटतक | तातिरकिटतक | कतधिरधिर | किटतकतकिट | |
| 0 | | 3 | | | |
| धा | कतधिरधिर | किटतकतकट | धा | कतधिरधिर | |
| × | | 2 | | | |
| किटतकतकिट | धा | धिरधिरकिटतक | तकिटधा | धिरधिरकिटतक | |
| 0 | | 3 | | | |
| तकिटधा | धिरधिरकिटतक | तकिटधा | धिरधिरकिटतक | तातिरकिटतक | |
| × | | 2 | | | |
| कतधिरधिर | किटतकतकिट | धा | कतधिरधिर | किटतकतकिट | |
| 0 | | 3 | | | |
| धा | कतधिरधिर | किटतकतकट | धा | धिरधिरकिटतक | |
| × | | 2 | | | |
| तकिटधा | धिरधिरकिटतक | तकिटधा | धिरधिरकिटतक | तकिटधा | |
| 0 | | 3 | | | |
| धिरधिरकिटतक | तातिरकिटतक | कतधिरधिर | किटतकतकिट | धा | |
| × | | 2 | | | |
| कतधिरधिर | किटतकतकिट | धा | कतधिधिर | किटतकतकिट | धी |
| 0 | | 3 | | | × |

**गत**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धाऽननाऽन | तकटतकट | धात्रकधितिट | धेऽतराऽन | कतिटकतऽ | |
| × | | 2 | | | |
| धेऽतराऽन | धात्रकधितिट | कतागदिगिन | नगनगनग | तकटतकट | |
| 0 | | 3 | | | |
| धात्रकधितिट | धेऽतराऽन | कतिटकतऽ | धेऽतराऽन | धात्रकधितिट | |
| × | | 2 | | | |
| कतागदिगिन | धा | कतागदिगिन | धा | कतागदिगिन | धी |
| 0 | | 3 | | | × |

### 3.3.2 पंचमसवारी ताल में रचनाएं :–

पाठ्यक्रम के अनुसार पंचमसवारी ताल विस्तृत अध्ययन की ताल है एवं प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम में मंच प्रदर्शन के लिए रखी गई है। इसमें उठान, पेशकार, दो कायदे, रेला, टुकड़ा, परन, चक्करदार (सादा), चक्करदार (फ़रमाइशी) एवं गत लिपिबद्ध कर प्रस्तुत की जा रही है।

**ठेका**

| धि | ना | धिधि | कत | धिधि | नाधि | धिना |
|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | | | |
| तीक | तिना | तिरकिट | तूना | कता | धिंधिं | नाधिं | धिना | धि |
| 0 | | | | 3 | | | | × |

**उठान**

| धागेतिना | किऽनकतातिर | किटतकतिरकिट | तकतिरकिटतक | तिरकिटधाती |
|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | |
| धाऽधाती | धाऽधाती | धा | तिरकिटधाती | धाऽधाती |
| | | 0 | | |
| धाऽधाती | धा | तिरकिटधाती | धाऽधाती | धाऽधाती | धि |
| | 3 | | | | × |

**पेशकार (मुख्य बोल)**

| धिंऽधिंता | ऽधाधिंता | धातीधाधा | धिंताऽधा | धिंताऽधा |
|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | |
| धिंताधाती | धातीधाधा | तिंतातिंऽ | तिंताऽता | तिंतातती |
| | | 0 | | |
| तातातिंता | ऽधाधिंता | ऽधाधिंता | धातीधाती | धाधाधिंता |
| | 3 | | | |

**पल्टा – 1**

| ऽधाधिंता | ऽधाधिंता | धातीधाधा | धिंताऽधा | धिंताऽधा |
|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | |
| धिंताधाती | धातीधाधा | तिंताऽता | तिंताऽता | तिंतातती |
| | | 0 | | |
| तातातिंता | ऽधाधिंता | ऽधाधिंता | धातीधाती | धाधाधिंता |
| | 3 | | | |

**पल्टा – 2**

| ऽधाऽधा | ऽधाधिंता | धातीधाधा | धिंताऽधा | धिताऽधा |
|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | |
| धिंताधाती | धातीधाधा | तिंताऽता | ऽताऽता | तिंतातती |
| | | 0 | | |
| तातातिंता | ऽधाधिंता | ऽधाधिंता | धातीधाती | धाधाधिंता |
| | 3 | | | |

**पल्टा – 3**

| धातीधाधा | धिंताधिंता | धातीधाधा | धिंताऽधा | धिंताऽधा |
|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | |
| धिंताधाती | धातीधाधा | तिंतातती | तातातिंता | तितातती |
| | | 0 | | |
| तातातिंता | ऽधाधिंता | ऽधाधिंता | धातीधाती | धाधातिंता |
| | 3 | | | |

## तिहाई

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धातीधाती | धाधाधिंता | धिंताधाती | धाधातिंता | धा1 | |
| × | | | 2 | | |
| 1धाती | धातीधाधा | धिंताधिंता | धातीधाधा | धिताधा | |
| | | 0 | | | |
| 12 | धातीधाती | धाधाधिंता | धिंताधाती | धाधाधिंता | धि |
| | 3 | | | | × |

## कायदा 1 – चतुरश्र जाति

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धाति | टधा | तिट | धिन | धाधा | |
| × | | | 2 | | |
| तिट | धिन | धाती | धिन | धिना | |
| | | 0 | | | |
| गिन | धाती | गिन | तिना | किन | |
| | 3 | | | | |
| ताति | टता | तिट | किन | ताता | |
| × | | | 2 | | |
| तिट | धिन | धाती | धिन | धिना | |
| | | 0 | | | |
| गिन | धाती | धिन | धिना | गिन | |
| | 3 | | | | |

## कायदे की दुगुन

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धातिटधा | तिटधिन | धाधातिट | धिनधाती | धिनधिना | |
| × | | | 2 | | |
| धिनधाती | धिनतिना | किनताति | टतातिट | किनताता | |
| | | 0 | | | |
| तिटकिन | धातीधिन | धिनागिन | धातीधिन | धिनागिन | |
| | 3 | | | | |

## पल्टा – 1

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धाधातिट | धिनधाती | टधातिट | धिनधाती | धिनधिन | |
| × | | | 2 | | |
| धिनधाती | धिनतिना | किनताता | तिटकिन | तातीटता | |
| | | 0 | | | |
| तिटधिन | धातीधिन | धिनागिन | धातीधिन | धिनागिन | |
| | 3 | | | | |

## पल्टा – 2

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तिटधिन | धाधातिट | धिनतिट | धिनताती | धिनधिन | |
| × | | | 2 | | |
| धिनधाती | धिनतिना | किनतिट | किनताता | तिटकिन | |
| | | 0 | | | |
| तिटधिन | धातीधिन | धिनगिन | धातीधिन | धिनागिन | |
| | 3 | | | | |

**पल्टा – 3**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धातीधिन × | धिनागिन | धाधातिट | धिनधाती 2 | धिनधिना |
| धिनधाती | धिनतिना | किनताती 0 | किनतिना | किनताता |
| तिटधिन | धातीधिन 3 | धिनागिन | धातीधिन | धिनागिन |

**तिहाई**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धातीधिन × | धिनागिन | धातीधिन | तिनाकिन 2 | धा1 |
| 2धाती | धिनधिना | गिनधाती 0 | धिनतिना | किनधा |
| 12 | धातीधिन 3 | धिनागिन | धातीधिन | तिनाकिन |

धि ×

**कायदा 2 – तिस्त्र जाति**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धाऽऽ × | धगेन | धाऽऽ | धातिरकिट 2 | धितिट |
| धिनधि | नागिन | धातिरकिट 0 | धितिट | धिनधा |
| ऽधिन | धातिरकिट 3 | धितिट | धिनति | नाकिन |
| ताऽऽ × | तकेन | ताऽऽ | तातिरकिट 2 | तितिट |
| किनति | नाकिन | धातिरकिट 0 | धितिट | धिनधा |
| ऽधिन | धातिरकिट 3 | धितिट | धिनधि | नागिन |

**कायदे की दुगुन**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धाऽऽधगेन × | धाऽऽधातिरकिट | धितिटधिनधि | नागेनधातिरकिट 2 | धितिटधिनधा |
| ऽधिनधातिरकिट | धितिटधिनति | धिनधिनागिन 0 | नाकिनताऽऽ | तकेनताऽऽ |
| तातिरकिरकिट | किनतिनाकिन 3 | धातिरकिटधितिट | धिनधाऽधिन | धातिरकिटधितिट |

**पल्टा – 1**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धेगनधातिरकिट × | धितिटधगेन | धाऽऽधगेन | धाऽऽधातिरकिट 2 | धितिटधिनधा |
| ऽधिनधातिरकिट | धिंतिटधिनति | नाकिनतकेन 0 | तातिरकिटतितिट | तकेनाऽऽ |
| तकेनताऽऽ | धातिरकिटधितिट 3 | धिनधाऽधिन | धातिरकिटधितिट | धिनधिनागिन |

**पल्टा –2**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धातिरकिटधितिट | धातिरकिटधितिट | धिनधाऽधिन | धाऽऽधातिरकिट | धितिटधिनधा |
| × | | | 2 | |
| ऽधिनधातिरकिट | धितिटधिनति | नाकेनतातिरकिट | तितिटतातिरकिट | तितिटकिनता |
| | | 0 | | |
| ऽकिनताऽऽ | धातिरकिटधितिट | धिनधाऽधिन | धातिरकिटधितिट | धिनधिनागिन |
| | 3 | | | |

**पल्टा – 3**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धातिरकिटधितिट | धातिरकिटधितिट | धिनधाऽधिन | धाऽऽधातिरकिट | धितिटधिनधा |
| × | | | 2 | |
| ऽधिनधातिरकिट | धितिटधिनति | नाकेनतातिरकिट | तितिटतातिरकिट | तितिटकिनता |
| | | 0 | | |
| ऽकिनताऽऽ | धातिरकिटधितिट | धिनधाऽधिन | धातिरकिटधितिट | धिनधिनागिन |
| | 3 | | | |

**तिहाई**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धातिरकिटधितिट | धिनधिनागिन | धातिरकिटधितिट | धिनधाऽकिन | धा1 |
| × | | | 2 | |
| 2धातिरकिट | धितिटधिनधि | नागिनधातिरकिट | धितिटगिनधा | ऽकिनधा |
| | | 0 | | |
| 12 | धातिरकिटधितिट | धिनधिनागिन | धातिरकिटधितिट | धिनधाऽकिन |
| | 3 | | | |

धि
×

**रेला – (मुख्य बोल)**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धाऽ | धातिर | किटतक | तिरकिट | धातिर |
| × | | | 2 | |
| किटतक | तिरकिट | धाऽ | धातिर | किटतक |
| | | 0 | | |
| तिरकिट | धातिर | किटतक | तातिर | किटतक |
| | 3 | | | |
| ताऽ | तातिर | किटतक | तिरकिट | तातिर |
| × | | | 2 | |
| किटतक | तिरकिट | धाऽ | धातिर | किटतक |
| | | 0 | | |
| तिरकिट | धातिर | किटतक | धातिर | किटतक |
| | 3 | | | |

**रेले की दुगुन**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धाऽधातिर | किटतकतिरकिट | धातिरकिटतक | तिरकिटधाऽ | धातिरकिटतक |
| × | | | 2 | |
| तिरकिटधातिर | किटतकतातिर | किटतकताऽ | तातिरकिटतक | तिरकिटतातिर |
| | | 0 | | |
| किटतकतिरकिट | धाऽधातिर | किटतकतिरकिट | धातिरकिटतक | धातिरकिटतक |
| | 3 | | | |

**पल्टा – 1**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धातिरकिरतक | तिरकिटधाऽ | धातिरकिटतक | तिरकिटधाऽ | धातिरकिटतक |
| × | | | 2 | |
| तिरकिटधातिर | किटतकतातिर | किटतकतातिर | किटतकतिरकिट | ताऽतातिर |
| | | 0 | | |
| किटतकतिरकिट | धाऽधातिर | किटतकतिरकिट | धातिरकिटतक | धातिरकिटतक |
| | 3 | | | |

**पल्टा – 2**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| तिरकिटधातिर | किटतकतिरकिट | धातिरकिटतक | तिरकिटधाऽ | धातिरकिटतक |
| × | | | 2 | |
| तिरकिटधातिर | किटतकतातिर | किटतकतिरकिट | तातिरकिटतक | तिरकिटतातिर |
| | | 0 | | |
| किटतकतिरकिट | धाऽधातिर | किटतकतिरकिट | धातिरकिटतक | धातिरकिटतक |
| | 3 | | | |

**पल्टा – 3**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धातिरकिटतक | धातिरकिटतक | धातिरकिटतक | तिरकिटधाऽ | धातिरकिटतक |
| × | | | 2 | |
| तिरकिटधातिर | किटतकतातिर | किटतकतातिर | किटतकतातिर | किटतकतातिर |
| | | 0 | | |
| किटतकतिरकिट | धाऽधातिर | किटतकतिरकिट | धातिरकिटतक | धातिरकिटतक |
| | 3 | | | |

**तिहाई**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धातिरकिटतक | धातिरकिटतक | धातिरकिटतक | तिरकिटधाती | धा1 | |
| × | | | 2 | | |
| 2धातिर | किटतकधातिर | किटतकधातिर | किटतकतिरकिट | धातीधा | |
| | | 0 | | | |
| 12 | धातिरकिटतक | धातिरकिटतक | धातिरकिटतक | तिरकिटधाती | धि |
| | 3 | | | | × |

**टुकड़ा**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| कऽतिट | घेघेतिट | कऽधातिट | कऽताऽ | धातिरकिटतक | |
| × | | | 2 | | |
| तातिरकिटतक | ताकड़ान | धा | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक | |
| | | 0 | | | |
| ताकड़ान | धा | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताकड़ान | धि |
| | 3 | | | | × |

**परन**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धिटधिट | धागेतिट | कऽधातिट | धागेतिट | कऽधातिट |
| × | | | 2 | |
| कऽधातिट | कऽधातिट | धागेतिट | गदीगिन | नागेतिट |
| | | 0 | | |
| धागेतिट | ताकेतिट | कतिटता | ऽनाधित्त | ताऽन |
| | 3 | | | |

| धित्ताताऽ | तिरकिटधित्त | तगेऽन | धा | धा |
|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | |
| धा | तिरकिटधित्त | तगेऽन | धा | धा |
| | | 0 | | |
| धा | तिरकिटधित्त | तगेऽन | धा | धा | धि |
| | 3 | | | | × |

**चक्करदार (सादा)** – रूपकताल अथवा आड़ाचार के 56 मात्रा के चक्करदार टुकड़े में प्रत्येक चक्कर के बाद दो मात्रा रूकने से तीन चक्कर में कुल मात्राएं 60 हो जाएगी। अतः यह पंचम सवारी की चार आवृत्ति, एकताल की पांच आवृत्ति एवं झपताल की 6 आवृत्ति में आएगा। चक्करदार रचना निम्न प्रकार से है जो कुल 60 मात्रा की है।

| घेतिरकिटतक | ताऽ | घेतिरकिटतक | ताऽकता | गऽदींऽ |
|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | |
| कतधाऽ | कृति | टता | घेतिरकिटतक | तातिरकिटतक |
| | | 0 | | |
| घेतिरकिटतक | ताऽकता | धा | घेतिरकिटतक | ताऽकता |
| | 3 | | | |
| धा | घेतिरकिटतक | ताऽकता | धा | 1 |
| × | | | 2 | |
| 2 | घेतिरकिटतक | ताऽ | घेतिरकिटतक | ताऽकता |
| | | 0 | | |
| गऽदींऽ | कृताधाऽ | कति | टता | घेतिरकिटतक |
| | 3 | | | |
| तातिरकिटतक | घेतिरकिटतक | ताऽकता | धा | घेतिरकिटतक |
| × | | | 2 | |
| ताऽकता | धा | घेतिरकिटतक | ताऽकता | धा |
| | | 0 | | |
| 1 | 2 | घेतिरकिटतक | ता | घेतिरकिटतक |
| | 3 | | | |
| ताऽकता | गऽदींऽ | कतधाऽ | कति | टता |
| × | | | 2 | |
| घेतिरकिटतक | तातिरकिट | घेतिरकिटतक | ताऽकता | धा |
| | | 0 | | |
| घेतिरकितक | ताऽकता | धा | घेतिरकिटतक | ताऽकता |
| | 3 | | | |

**चक्करदार (फरमाइशी)**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| दिंगदिं | नाकत | दिंगदिं | नाकत | तकट |
| × | | | 2 | |
| धातिरकिट | दिंगदिं | नाऽऽ | धाऽन | धाऽन |
| | | 0 | | |
| ताकेतिर | किटतक | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताकड़ान |
| | 3 | | | |
| धा | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताकड़ान | धा |
| × | | | 2 | |
| धातिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताकड़ान | धा | 1 |
| | | 0 | | |
| 2 | दिंगदिं | नाकत | दिंगदि | नाकत |
| | 3 | | | |
| तकट | धातिरकिट | दिंगदिं | नाऽऽ | धाऽन |
| × | | | 2 | |
| धाऽन | ताकेतिर | किटतक | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक |
| | | 0 | | |
| ताकड़ान | धा | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताकड़ान |
| | 3 | | | |
| धा | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताक्ड़ान | धा |
| × | | | 2 | |
| 1 | 2 | दिंगदिं | नाकत | दिंगदिं |
| | | 0 | | |
| नाकत | तकट | धातिरकिट | दिंगदिं | नाऽऽ |
| | 3 | | | |
| धाऽन | धाऽन | ताकेतिर | किटतक | धातिरकिटतक |
| × | | | 2 | |
| तातिरकिटतक | ताकड़ान | धा | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक |
| | | 0 | | |
| तकड़ान | धा | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताकड़ान |
| | 3 | | | |

**गत**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धाऽन | धिकिट | तकट | धिकिट | धातिरकिट |
| × | | | 2 | |
| धिकिट | कताग | दिगिन | दींऽदीं | ऽदींऽ |
| | | 0 | | |
| नगन | गनग | तकट | तकट | धाऽक |
| | 3 | | | |
| धातिट | धाऽन | धाऽन | धा | ताऽन |
| × | | | 2 | |
| धा | धाऽन | धाऽन | धा | ताऽन |
| | | 0 | | |
| धा | धाऽन | धाऽन | धा | ताऽन |
| | 3 | | | |

धि
×

### 3.3.3 दीपचन्दी ताल में रचनाएं :–

पाठ्यक्रम के अनुसार यह अविस्तृत अध्ययन की ताल है। इस ताल में एकल वादन नहीं किया जाता बल्कि यह ताल ठुमरी गायकी के साथ प्रयोग की जाती है एवं इसमें बोल बांट ही की जाती है।

**ठेका**

| धा | धिं | ऽ | धा | धा | तिं | ऽ | ता | तिं | ऽ | धा | धा | धिं | ऽ | धा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | | | | 0 | | | 3 | | | | × |

**बोल बांट – 1**

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| धाती | धाधा | धिना | धाती | धाती | धाधा | तिना |
| × | | | 2 | | | |
| ताती | ताता | तिना | धाती | धाती | धाधा | धिना |
| 0 | | | 3 | | | |
| धाधा | धिना | धाती | धाती | धाती | धाधा | तिना |
| × | | | 2 | | | |
| ताता | तिना | ताती | धाती | धाती | धाधा | धिना |
| 0 | | | 3 | | | |
| धिना | धाधा | धिना | धाती | धाती | धाधा | तिना |
| × | | | 2 | | | |
| तिना | ताता | तिना | धाती | धाती | धाधा | धीना |
| 0 | | | 3 | | | |
| धाधा | धाती | धिना | धाती | धाती | धाधा | तिना |
| × | | | 2 | | | |
| ताता | ताती | तिना | धाती | धाती | धाधा | धिना |
| 0 | | | 3 | | | |

**तिहाई**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धाधा | धिना | धाधा | धिना | धा | धाधा | धिना | |
| × | | | 2 | | | | |
| धाधा | धिना | धा | धाधा | धिना | धाधा | धिना | धा |
| 0 | | | 3 | | | | × |

**बोल बांट – 2**

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| धागेधिं | धागेनागे | धिनागिन | धागेनागे | धिनागिन | धागेनागे | तिनाकिन |
| × | | | 2 | | | |
| ताकेति | नाकेनाके | तिनातिन | धागेनागे | धिनागिन | धागेनागे | धिनागिन |
| 0 | | | 3 | | | |
| धागेनागे | धिनागिन | धागेधिं | धागेनागे | धिनागिन | धागेनागे | तिनाकिन |
| × | | | 2 | | | |
| ताकेनाके | तिनाकिन | ताकेतिं | धागेनागे | धिनागिन | धागेनागे | धिनागिन |
| 0 | | | 3 | | | |
| धिनागेना | धागेनागे | धिनागिन | धिनागिन | धागेधिं | धागेनागे | तिनाकिन |
| × | | | 2 | | | |

| तिनाकेना | ताकेनाके | तिनाकिन | धिनागिन | धागेधिं | धागेनागे | धिनागिन |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 0 | | | 3 | | | |
| धिनागिन | धिनागिन | धागेधिं | धागेनागे | धिनागिन | धागेनागे | तिनाकिन |
| × | | | 2 | | | |
| तिनाकिन | तिनाकिन | ताकेतिं | धागेनागे | धिनागिन | धागेनागे | धिनागिन |
| 0 | | | 3 | | | |

**तिहाई**

| धागेनागे | धिनागिन | धागेनागे | तिनाकिन | धा | धागेनागे | धिनागिन | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | | | | |
| धागेनागे | तिनाकिन | धा | धागेनागे | धिनागिन | धागेनागे | तिनाकिन | धा |
| 0 | | | 3 | | | | × |

### .3.4 तीवरा ताल में रचनाएं :–

यह ताल पखावज पर बजाई जाती है। पाठ्यक्रम के अनुसार यह अविस्तृत अध्ययन की ताल है। इसमें तिहाई, टुकड़ा, परन, चक्करदार सादा व फरमाइशी, रूपक ताल की रचनाओं की भांति ही बजेगी, पर तबले पर खुले हाथ से प्रयोग की जाएगी।

**ठेका**

| धा | दीं | ता | तिट | कता | गदि | गन | धा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | | 3 | | × |

**तिहाई**

| तिटकता | गदिगन | धातिट | कतागदि | गनधा | तिटकता | गदिगन | धा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | | 2 | | 3 | | × |

### 3.3.5 लक्ष्मी ताल में रचनाएं :–

यह ताल पखावज पर बजाई जाती है एवं पाठ्यक्रम के अनुसार यह अविस्तृत अध्ययन की ताल है। इसमें तिहाई, टुकड़ा, परन, चक्करदार सादा व फरमाइशी रचनाएं, लिपिबद्ध कर प्रस्तुत की जा रही है।

**ठेका**

| धिं | तेत | धेत | धेत | दिं | ता | तिट | कत | धा | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 | |
| दिं | ता | धुम | किट | धुम | किट | कत | गदि | गन | धिं |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |

**तिहाई – 1**

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तिट | कता | गदी | गिन | धा | 1 | 2 | तिट | कता | |
| x | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 | |
| गदी | गिन | धा | 1 | 2 | तिट | कता | गदी | गिन | धिं |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |

**तिहाई – 2**

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कतिटत | किनताके | तिटकता | गदीगिन | धा | 1 | 2 | कतिटत | किनताके | |
| x | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 | |
| तिटकता | गदीगिन | धा | 1 | 2 | कतिटत | किनताके | तिटकता | गदीगिन | धिं |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |

**टुकड़ा – 1**

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तिटतिट | कताऽन | ताऽधाऽ | तिरकिट | धित | तिरकिट | धित्तधित्त | तिटतिट | कताऽधा | |
| x | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 | |
| ऽनधाऽ | धा | ऽतिट | कतऽधा | ऽनधाऽ | धा | ऽतिट | कताऽधा | ऽनधाऽ | धिं |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |

**टुकड़ा – 2**

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| घेधेतिट | घेघेतिट | किऽनक | तिरकिट | धाऽघिड | नगदिंऽ | धिडनग | तिरकिट | तिटकता | |
| x | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 | |
| गदीगिन | धा | ऽ | तिटकता | गदीगिन | धा | ऽ | तिटकता | गदीगिन | धिं |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |

**परन**

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धिटधिट | धागेतिट | कधातिट | धागेतिट | कधातिट | कधातिट | कधातिट | धागेतिट | गदीगिन |
| x | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 |
| नागेतिट | धागेतिट | ताकितिट | कतिटत | किनताके | तिटकता | गदीगिन | धागेतिट | धागेतिट |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 |
| ताकेतिट | ताकेतिट | धित्ततगे | ऽनधित्त | तगेऽन | धित्ततऽ | तिरकिटधित्त | तगेऽन | धा |
| x | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 |
| धा | धा | तगेऽन | धा | धा | धा | तगेऽन | ध | धा | धिं |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 | × |

चक्करदार सादा

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कऽतिट | घेधेतिट | कधातिट | कऽताऽ | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताकडान | धाधा | धा |
| x | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 |
| तातिरकिटतक | ताकडान | धाधा | धा | तातिरकिटतक | ताकड़ान | धाधा | धा | 1 |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 |
| 2 | कऽतिट | घेघेतिट | कधातिट | कऽताऽ | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताकड़ान | धाधा |
| x | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धा | तातिरकिटतक | ताकड़ान | धाधा | धा | तातिरकिटतक | ताकड़ान | धाधा | धा |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 |
| 1 | 2 | कऽतिट | घेघेतिट | कधातिट | कऽताऽ | धातिरकिटतक | तातिरकिटतक | ताकड़ान |
| x | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 |
| धाधा | धा | तातिरकिटतक | ताकड़ान | धाधा | धा | तातिरकिटतक | ताकड़ान | धाधा |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 |

इस चक्करदार टुकड़ा का एक चक्कर सत्रह मात्रा का है, जिसके बाद दो मात्रा का विश्राम है जो कि दूसरे चक्कर में भी होगा एवं यह कुल 54 मात्रा का है।

## चक्करदार फरमाइशी

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धागेतिट | धागेतिट | ताकेतिट | ताकेतिट | कधातिट | धागेतिट | गदीगिन | नागेतिट | कतिटत |
| x | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 |
| किनताके | तिटकता | गदीगिन | तिटकता | गदीगिन | तिटकता | गदीगिन | तिटकता | गदीगिन |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 |
| धा | तिटकता | गदीगिन | तिटकता | गदीगिन | धा | तिटकता | गदीगिन | तिटकता |
| x | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 |
| गदीगिन | धा | 1 | 2 | धागेतिट | धागेतिट | तकितिट | ताकेतिट | कधातिट |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 |
| धागतिट | गदीगिन | नागेतिट | कतिटत | किनताके | तिटकता | गदीगिन | तिटकता | गदीगिन |
| x | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 |
| तिटकता | गदीगिन | तिटकता | गदीगिन | धा | तिटकता | गदीगिन | तिटकता | गदीगिन |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 |
| धा | तिटकता | गदीगिन | तिटकता | गदीगिन | धा | 1 | 2 | धागेतिट |
| x | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 |
| धागेतिट | ताकेतिट | ताकेतिट | कधातिट | ताकेतिट | गदीगिन | नागेतिट | कतिटत | किनताके |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 |
| तिटकता | गदीगिन | तिटकता | गदीगिन | तिटकता | गदीगिन | तिटकता | गदीगिन | धा |
| x | 2 | 3 | 0 | 4 | 5 | 6 | 0 | 7 |
| तिटकता | गदीगिन | तिटकता | गदीगिन | धा | तिटकता | गदीगिन | तिटकता | गदीगिन |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 0 |

उक्त फरमाइशी चक्करदार कुल 90 मात्रा की है। अतः यह झपताल एवं पंचमसवारी ताल में बिना परिवर्तन के प्रयोग की जा सकती है।

## 3.4 सारांश

तबला वादन हेतु तबले की रचनाओं का ज्ञान आवश्यक है जो शिक्षक एवं प्राप्त पुस्तकों में रचनाओं से प्राप्त किया जा सकता है। इस इकाई में पाठ्यक्रम की तालों में विभिन्न रचनाएं लिपिबद्ध कर प्रस्तुत की गई हैं जिसमें भातखण्डे ताल पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस इकाई में दी गई सभी रचनाओं को तबले पर प्रयोग करने में सक्षम होंगे। पुस्तकों में भी तबले की रचनाएं प्राप्त होती है अतः इस इकाई के अध्ययन के पश्चात तबले की रचनाओं को पुस्तक से पढ़कर भी तबले पर बजा पाएंगे। इस इकाई से आप रचनाओं के तालों में प्रयोग के विषय में जान गए हैं जो कि आपको सफल तबला वादक बनने में सहायक होगा।

## 3.5 सहायक/ उपयोगी पाठ्य सामग्री

1. मिस्त्री, डॉ0 आबान ई0, तबले की बन्दिशें, स्वर साधना समिति, एनेक्स जम्बुलबाडी, मुम्बई।
2. पागलदास, रामशंकर, तबला कौमुदी, संगीत कार्यालय, हाथरस।
3. मिश्र, पं0 छोटेलाल, ताल प्रसून, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

## 3.6 निबन्धात्मक प्रश्न

1. पाठ्यक्रम की किन्हीं दो तालों में उठान, पेशकार, दो कायदे, रेला, टुकड़ा, परन, चक्करदार (सादा), चक्करदार (फरमाइशी) एवं गत लिपिबद्ध कीजिए।